राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण गुरुवार 05 मार्च 2026 वर्ष-9,अंक-39 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अविमुक्तेश्वरानंद का योगी सरकार से सवाल... बताएं यूपी में गायों की संख्या में 4 प्रतिशत की कमी कैसे आई

बीफ एक्सपोर्ट से जुड़ी कंपनियां सत्तारूढ़ दल को चंदा क्यों दे रही हैं?

वाराणसी (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश के काशी में शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के गौ-माता को लेकर दिए बयान पर पलटवार किया। अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि एक तरफ योगी सरकार गौ-रक्षा की बात करती है, दूसरी तरफ गौ-तस्करों से चंदा लेती है। यूपी में गायों की संख्या में 4 प्रतिशत की कमी आई है। डिप्टी सीएम मौर्य बताएं ऐसा क्यों है?

शंकराचार्य ने कहा कि 7 मार्च से ÷शंखनाद यात्रा÷ की शुरुआत होगी। जौनपुर, सुल्तानपुर, रायबरेली, उन्नाव होकर 12 मार्च को लखनऊ पहुंचेगी। जहां पर गौ-प्रतिष्ठा ध्वज स्थापना और गौ-माता की रक्षा के लिए धर्मयुद्ध के शंखनाद का कार्यक्रम प्रस्तावित है। डिप्टी सीएम मौर्य की बात पर उन्होंने कहा, यह सही बात है कि भारत का नागरिक देश में कहीं भी आने-जाने के लिए स्वतंत्र है। इसमें उन्होंने न कुछ गलत कहा है। न ही कोई अतिशयोक्ति की है। जहां तक सनातन धर्म का सवाल है, कोई भी सनातन धर्मी अपने गुरु के आगमन पर स्वागत करता है, यह हमारी परंपरा है। यह विचारणीय विषय है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि पिछली जनगणना में यूपी में गायों की संख्या में 4 प्रतिशत की कमी आई है। अगर प्रदेश में गाय को खरोंच तक नहीं लगती, तब यह 4 प्रतिशत कमी कैसे हुई? यह कोई निजी आंकड़ा नहीं है, बल्कि सरकारी डेटा है। योगी सरकार को इसका स्पष्ट उत्तर देना चाहिए। उन्होंने सवाल किया अगर कहा जा रहा है कि गौ-हत्या करने वालों की कोई औकात नहीं है, तब फिर बीफ एक्सपोर्ट से जुड़ी कंपनियां सत्तारूढ़ दल को चंदा क्यों दे रही हैं? उनका उद्देश्य क्या है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इन सवालों का जवाब प्रदेश के मुखिया को देना चाहिए।

झारखंड सीएम ने खाड़ी देशों में फंसे भारतीय को वापस लाने पीएम मोदी से किया आग्रह

रांची(एजेंसी)। झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने खाड़ी देशों में बदलती स्थिति को बेहद चिंताजनक बताते हुए पीएम मोदी से वहां फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए जरुरी कदम उठाने का आग्रह किया है। सीएम सोरेन ने आश्वस्त किया कि उनकी सरकार विदेश में फंसे राज्य के लोगों की हर संभव मदद करेगी। सीएम सोरेन ने एक्स पर लिखा- खाड़ी क्षेत्र में तेजी से बदल रही स्थिति चिंता का विषय है। उन्होंने पीएम मोदी और विदेश मंत्री एस जयशंकर से अनुरोध किया कि इस गंभीर परिस्थिति में जो भी भारतीय स्वयं को असुरक्षित या फंसा हुआ महसूस कर रहे हैं, उन्हें सुरक्षित स्वदेश लाने के लिए जरुरी कदम उठाया जाएं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सीएम सोरेन ने खाड़ी देशों में रहने वाले झारखंड समेत देश के अन्य हिस्सों के प्रवासियों से सतर्क रहने की अपील की और आश्वासन दिया कि भारत आपके साथ खड़ा है। उन्होंने लिखा- विशेष रूप से झारखंड के जो लोग खाड़ी देशों में रह रहे हैं, उन सभी से अपील की कि किसी भी परेशानी में झारखंड राज्य प्रवासी नियंत्रण कक्ष के हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करें।

इसरो का वैज्ञानिक बताकर महिला से शादी का झांसा देकर 42.64 लाख रुपये की ठगी

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे के वाकड इलाके में ऑनलाइन शादी करने की साइट के माध्यम से एक महिला सॉफ्टवेयर इंजीनियर से 42.64 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। आरोपी जयेश पाटिल ने खुद को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का वैज्ञानिक बताकर शादी का झांसा देकर महिला का विश्वास जीत लिया। 28 साल की पीड़िता, जो हिंजवड़ी स्थित एक प्रतिष्ठित आईटी कंपनी में कार्यरत है, ने नवंबर 2024 में वेबसाइट पर अपनी प्रोफाइल बनाई थी। तभी आरोपी ने महिला से संपर्क कर शादी की इच्छा जाहिर की। जाँच में पता चला कि आरोपी ने धीरे-धीरे महिला का भरोसा जीता और भविष्य में साथ रहने तथा संपत्ति खरीदने के बहाने पैसों की मांग शुरू की। नवंबर 2024 से जनवरी 2025 के बीच पीड़िता ने अलग-अलग किस्तों में कुल 42.64 लाख रुपये उसके खातों में ट्रांसफर कर दिए। महिला को तब शक हुआ जब उसने पाया कि आरोपी वास्तव में इसरो में कार्यरत नहीं है। वाकड पुलिस ने त्वरित कार्रवाई कर 16.65 लाख रुपये फ्रीज कर बरामद किए, जबकि करीब 27 लाख रुपये की तलाश जारी है। आरोपी की पहचान जयेश पाटिल उर्फ आदर्श म्हात्रे, निवासी अलीबाग (रायगढ़) के रूप में हुई। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, वह पहले भी इसी तरह के एक अन्य ठगी मामले में नवी मुंबई पुलिस द्वारा गिरफ्तार हो चुका है। प्रारंभिक जांच में पता चला कि वह मैट्रिमोनियल प्लेटफॉर्म पर शिक्षित महिलाओं को निशाना बनाता था और ठगी की रकम से गोवा में कैसिनो समेत विलासी जीवन जी रहा था। अभी आरोपी 4 मार्च तक नवी मुंबई पुलिस की हिरासत में है। रिमांड खत्म होने के बाद वाकड पुलिस उसे अपने कब्जे में लेकर आगे की पूछताछ करेगी। घटना ने ऑनलाइन डेटिंग और मैट्रिमोनियल प्लेटफॉर्म पर सावधानी बरतने की जरूरत पर फिर से जोर दिया है।

पटियाला के शीश महल हेरिटेज फेस्टिवल पर मची भगदड़, दो युवक घायल

पटियाला (एजेंसी)। पटियाला के शीश महल में चल रहे हेरिटेज फेस्टिवल के आखिरी दिन पंजाबी गायक आर नैत के कार्यक्रम के लिए भारी भीड़ उमड़ी। आयोजकों द्वारा महंगी टिकटें बेची गई थीं, लेकिन पर्याप्त प्रबंध न होने के कारण लोग अंदर नहीं जा सके और गेट बंद कर दिए गए। कुछ लोग कार्यक्रम देखने के लिए शीश महल की ऊंची दीवारें फांदने लगे। इसी अफरातफरी में दो युवक दीवार से गिर गए और उनकी टांगें टूट गईं। दोनों को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने आरोप लगाया कि आयोजन में सुरक्षा और भीड़ नियंत्रण के पर्याप्त इंतजाम नहीं थे। कई लोग जिन्होंने महंगी टिकट खरीदी थी, उन्हें भी अंदर प्रवेश नहीं दिया गया। घटना स्थल के पास बिजली की तारें भी थीं। यदि किसी का हाथ तारों से छूता, तो बड़ा हादसा हो सकता था।

पंजाब के सीएम ऑफिस का दफ्तर हाइजैक!

जालंधर (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुखपाल खैहरा का पंजाब सरकार पर एक और हमला बोला है। खैहरा ने टवीट कर कहा है कि सी.एम. भगवंत मान के डीपीआरओ दफ्तर को रोजाना स्पोक्समैन से जुड़े एक करीबी व्यक्ति ने कथित रूप से अपने कब्जे में ले लिया है, जो आम आदमी पार्टी की राजनीति के अनचाहे प्रचार पर जनता के पैसे बर्बाद कर रहा है। खैहरा ने आरोप लगाया की रोजाना स्पोक्समैन का को-पार्टनर अमनदीप सिंह डी.पी.आर.ओ. को चला रहा है। उन्होंने कहा कि जिस दिन सरकार बदलेगी, इसका पूरा आडिट होगा और जितना पैसा फिजूलखर्ची पर गया है, उसका हिसाब लिया जाएगा।

मुंबई में 4 जगहों पर एटीएस का छापा, चार गिरफ्तार, आतंकी कनेक्शन का शक

मुंबई (एजेंसी)। एक ओर जहां पूरे देश में होली का त्योहार बड़े जोश के साथ मनाया जा रहा है। मुंबई समेत महाराष्ट्र में भी होली का उत्साह चरम पर है, वहीं महाराष्ट्र एंटी-टेररिज्म स्क्वॉड यानि एटीएस ने मुंबई में एक बड़ी कार्रवाई की है। खबर है कि एटीएस ने मुंबई शहर के कुर्ला और गोवंडी में भीड़भाड़ वाली जगहों पर छापा मारा है। इस छापामारी से हड़कंप मच गया है। मिली जानकारी के अनुसार एटीएस ने मुंबई में चार जगहों पर रेड मारी है। ये रेड शहर के गोवंडी और कुर्ला में भीड़भाड़ वाली जगहों पर की गई है। गोवंडी में तीन और कुर्ला में एक जगह पर छापा मारा गया है। इस कार्रवाई में पूछताछ के लिए चार संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। शक है कि इन चारों के किसी आतंकी संगठन से लिंक हैं। सूत्रों के मुताबिक, महाराष्ट्र एंटी-टेररिज्म स्क्वॉड ने एक आतंकवादी संगठन के कथित ऑनलाइन प्रोपेगैंडा को लेकर मुंबई में तीन जगहों पर बड़ी रेड की। यह कार्रवाई सोमवार रात शुरू हुआ और देर रात तक चला। रेड के दौरान मोबाइल फोन और लैपटॉप समेत कई इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस ज़ब्त किए गए और कई लोगों से पूछताछ की जा रही है। यह रेड कुछ लोगों के डिजिटल प्लेटफॉर्म के ज़रिए कट्टरपंथी सोच फैलाने और उसका इस्तेमाल करने के शक में की गई थी। गिरफ्तार किए गए युवाओं पर देशद्रोह रोकथाम कानून के तहत बैन एक आतंकवादी संगठन से संबंध होने का शक है। यह भी बताया गया है कि एटीएस को इस बात के पक्के सबूत मिले हैं कि गिरफ्तार किए गए लोगों के एक आतंकवादी संगठन से संबंध हैं।

युवती का शव खेत में मिला, दर्ज कराया था दुष्कर्म का केस और कोर्ट में बयान होना था.....

फतेहपुर (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश में फतेहपुर जिले के गाजीपुर के एक गांव के बाहर एक युवती का शव खेतों में मिलने से सनसनी मच गई है। युवती ने इसके पहले दुष्कर्म का केस दर्ज कराया था। और इसके बाद युवती का कोर्ट में बयान भी होना था। लेकिन इसके पहले ही उसकी संदिग्ध हालात में मौत हो गई। युवती के गले और चेहरे पर गंभीर चोट के निशान हैं, जिससे हत्या की आशंका है। पुलिस ने दुष्कर्म आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। केवगांव निवासी युवती का शव गांव से करीब एक किमी दूर चने के खेत में पड़ा मिला। परिजनों के मुताबिक रविवार की रात करीब 12 बजे वह लोग सो रहे थे। तभी बेटी घर से निकल गई। खोजबीन के बाद रात करीब ढाई बजे वह अचेत अवस्था में खेत में मिली। चेहरे व गले पर काले चोट के निशान भी मिले हैं, जिससे हत्या की आशंका है। मृतक युवती की मां ने गांव के सुनील यादव पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने आरोप लगाया।

खामेनेई की हत्या पर मोदी सरकार की चुप्पी, तटस्थता नहीं, बल्कि जिम्मेदारी से पीछे हटना

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की लक्षित हत्या पर केंद्र सरकार के रुख की तीखी आलोचना की है। उन्होंने एक लेख के माध्यम से अपनी बात रखते हुए कहा कि इस संवेदनशील वैश्विक घटनाक्रम पर भारत की चुप्पी तटस्थता नहीं, बल्कि अपनी जिम्मेदारी से पीछे हटना है। सोनिया गांधी के अनुसार, सरकार की इस खामोशी से भारत की विदेश नीति की दिशा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न चिह्न खड़े होते हैं।

सोनिया गांधी ने घटना का जिक्र करते हुए कहा कि एक मार्च को ईरान ने अपने सर्वोच्च नेता की हत्या की पुष्टि की थी, जो अमेरिका और इस्त्राइल द्वारा किए गए लक्षित हमलों का परिणाम था। उन्होंने इसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक बड़ा विघटन करार देते हुए कहा कि चल रही राजनयिक वार्ताओं के बीच किसी सत्तारूढ़ राष्ट्राध्यक्ष की इस तरह हत्या करना बेहद चिंताजनक है। उन्होंने इस विषय पर संसद में विस्तृत चर्चा की भी मांग उठाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधा निशाना साधते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने न तो इस हत्या की निंदा की और न ही ईरान की संप्रभुता के उल्लंघन पर कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया दी। सोनिया गांधी ने तर्क दिया कि बिना किसी औपचारिक युद्ध की घोषणा के और कूटनीतिक प्रक्रिया के दौरान किसी राष्ट्राध्यक्ष की हत्या करना संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 2(4) की भावना के पूरी तरह विपरीत है। यह अनुच्छेद किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ बल प्रयोग पर रोक लगाता है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र ऐसे कृत्यों पर सिद्धांत आधारित आपत्ति दर्ज नहीं करता, तो भविष्य में अंतरराष्ट्रीय मानकों का क्षरण सामान्य हो जाएगा। उन्होंने भारत के ब्रिक्स साझेदारों और वैश्विक दक्षिण के देशों के रुख का हवाला देते हुए कहा कि भारत का वर्तमान रवैया गलत संकेत भेज रहा है, जो चिंता का विषय है।

वकीलों को अपनी सफलता के लिए जिम्मेदारी से काम करना चाहिए

-सीजेआई ने युवा विधि स्नातकों को सशक्त और व्यावहारिक का दिया संदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा है कि कानूनी व्यवस्था में जनता का विश्वास वकीलों के आचरण पर बहुत हद तक निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि कानूनी पेशे में जनता का विश्वास उन लोगों की ईमानदारी और निरंतरता पर निर्भर करता है जो वकालत करते हैं। उन्होंने कहा कि हर पेशेवर निर्णय चाहे वह फीस, मुवक्किल की गोपनीयता हितों के टकराव या कोर्ट में व्यवहार से संबंधित हो, उस विश्वास को मजबूत या कमजोर करने में योगदान देता है। गांधीनगर में आयोजित गुजरात राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के 16वें दीक्षांत समारोह में सीजेआई सूर्यकांत ने युवा विधि स्नातकों को यह सशक्त और व्यावहारिक संदेश दिया।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सीजेआई द्वारा नैतिक आधारों पर जोर देना अहम है। वह भी तब जब आज के माहौल में जहां संस्थानों में जनता के विश्वास पर कड़ी नजर रखी जाती है।

सीजेआई सूर्यकांत ने छात्रों को याद दिलाया कि विश्वसनीयता धीरे-धीरे बनती है और जल्दी ही खो भी जाती है। वकीलों को न केवल अपनी सफलता के लिए बल्कि न्याय व्यवस्था के स्वास्थ्य के लिए भी जिम्मेदारी से काम करना चाहिए।

यह दीक्षांत समारोह ऐसे समय में हुआ जब भारतीय कानूनी व्यवस्था गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। देशभर में 17 लाख से ज्यादा पंजीकृत वकीलों और 50 करोड़ से ज्यादा लंबित मामलों के साथ, दक्षता और विशिष्ट क्षेत्र की विशेषज्ञता की जरुरत है। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि मेरे प्रिय स्नातकों इस पेशे में आपकी सही जगह क्या है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका सामना जल्द से जल्द करना जरुरी है, क्योंकि यह शायद ही कभी उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो हर चीज में समान रूप से प्रयास करते हैं। उन्होंने साफ किया कि यह समझ तुरंत नहीं आती। यह अनुभव, आत्म-चिंतन और व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होती है।

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि विधि पेशे में विशेषज्ञता को महत्व दिया जाता है, न कि औसत दर्जे को। उन्होंने न्याय व्यवस्था में जनता के विश्वास को मजबूत करने के लिए ईमानदारी, प्रशिक्षण और अकादमिक जगत और व्यवहार के बीच के अंतर को पाटने पर भी बल दिया। सीजेआई ने युवा विधि स्नातकों को एक सशक्त और व्यावहारिक संदेश दिया। टी-20 क्रिकेट का उदाहरण देते कहा कि सूर्यकुमार यादव से डेथ ओवरों में गेंदबाजी करने या बुमराह से चेज को संभालने की उम्मीद नहीं की जाती। उन पर भरोसा किया जाता है कि वे वही करेंगे जिसमें वे माहिर हैं और टीम इसी स्पष्टता के आधार पर बनाई जाती है। उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि वे अपनी क्षमताओं को शीघ्र पहचानें और हर चीज में औसत दर्जे का बनने की कोशिश करने के बजाय उन्हीं क्षमताओं के इर्द-गिर्द अपना करियर बनाएं।

अपने संबोधन के आखिर में सीजेआई सूर्यकांत ने तैत्तिरीय उपनिषद के प्राचीन भारतीय ज्ञान का हवाला देते हुए स्नातकों को उनकी नैतिक जिम्मेदारी याद दिलाई। उन्होंने जिक्र करते हुए कहा कि सत्य बोलो, धर्म के मार्ग पर चलो। इसके जरिए से उन्होंने इस बात पर बल दिया कि विधि में सफलता केवल कौशल पर ही नहीं, बल्कि चरित्र पर भी निर्भर करती है।

पटना में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने कार्यकर्ताओं के साथ खेली होली

पटना (एजेंसी)। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने पटना में कार्यकर्ताओं के साथ धूमधाम से होली मनाई। एक कार्यक्रम में वे 'पटना में राम खेले होली' गीत पर झूमते दिखाई दिए। उन्होंने मंच से फूल बरसाए, तालियां बजाईं और समर्थकों का उत्साह बढ़ाया। मंच के नीचे खड़ी महिलाओं ने उनसे फोटो खिंचवाने का आग्रह किया, तब उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि मोबाइल दीजिए, मैं ऊपर से ही फोटो खींच देता हूं। उन्होंने कहा कि होली के दिन भाषण नहीं, बल्कि गीत-संगीत का आनंद लेना चाहिए। कार्यक्रम में बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और दिलीप जायसवाल भी मौजूद रहे। करीब 15-20 मिनट बाद नितिन नवीन कार्यक्रम से रवाना हो गए, जिसके बाद कार्यकर्ताओं ने कुर्ता फाड़ होली खेली और जमकर नृत्य किया। बिहार में होलिका दहन के साथ ही होली की धूम शुरू हो चुकी है। पूर्णिया में लगभग 40 फीट ऊंची होलिका का दहन किया गया। छुट्टियों के कारण ट्रेनों में भारी भीड़ देखी जा रही है। जनरल कोच फुल होने पर यात्री स्लीपर और एसी कोच में भी सफर कर रहे हैं। भीड़ को देखते हुए पूर्व मध्य रेल ने दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान और यूपी सहित 10 राज्यों के लिए 42 होली स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। साथ ही 150 अतिरिक्त बसें भी चलाई जाएंगी। होली को लेकर पूरे बिहार में पुलिस अलर्ट पर है। डीजे और अश्लील गानों पर प्रतिबंध लगाया गया है। हुड़दंग, अफवाह फैलाने और सड़क पर रेसिंग करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। अतिरिक्त पुलिस बल, होमगार्ड और केंद्रीय बलों की तैनाती कर 24 घंटे मॉनिटरिंग की व्यवस्था की गई है।

बिहार का तापमान पहुंचेगा 40 डिग्री सेल्सियस, मार्च से ही तपिश शुरू, मौसम विभाग ने किया अलर्ट

पटना (एजेंसी)। बिहार में मार्च महीने की शुरुआत के साथ ही मौसम के मिजाज में तल्खी आने लगी है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के ताजा विश्लेषण के अनुसार, इस साल गर्मी न केवल जल्दी शुरू हुई है, बल्कि यह सामान्य के मुकाबले कहीं अधिक तीखी और लंबे समय तक रहने वाली है। मौसम वैज्ञानिकों ने संकेत दिया है कि मार्च से लेकर मई तक राज्य का अधिकतम और न्यूनतम तापमान सामान्य से ऊपर बना रहेगा, जिसका सीधा असर आम जनजीवन पर पड़ना तय है।

मौसम केंद्र के विशेषज्ञों के मुताबिक, इस बार पूर्वी और पूर्व-मध्य भारत के हिस्सों में हीटवेव यानी लू चलने वाले दिनों की संख्या सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। चूंकि बिहार इसी क्षेत्र में आता है, इसलिए राज्य के अधिकांश जिलों में अप्रैल और मई के दौरान भीषण लू का प्रकोप रहेगा। दक्षिणी और पश्चिमी जिलों में तो अभी से ही तापमान सामान्य से 2-3 डिग्री अधिक दर्ज किया जा रहा है। इस साल की गर्मी की एक बड़ी विशेषता हीट आइलैंड प्रभाव होगी। शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट की ऊंची इमारतें, पक्की सड़कें और वाहनों की भीड़ गर्मी को सोख लेती है और उसे देर रात तक छोड़ती रहती है। इसके कारण शहरों में रात के समय भी तापमान अधिक रहेगा और लोगों को उमस भरी गर्मी से

राहत नहीं मिलेगी। मौसम विभाग का मानना है कि यह स्थिति मई के अंत तक बनी रहेगी, जिसके बाद ही प्री-मानसून की गतिविधियां शुरू होने की उम्मीद है। प्रचंड गर्मी और लू के खतरों को देखते हुए स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने अभी से बचाव की तैयारी करने की सलाह दी है। शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) से बचने के लिए प्यास न लगने पर भी नियमित अंतराल पर पानी, नींबू पानी, छाछ या ओआरएस का सेवन करना आवश्यक है। दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच, जब सूरज की किरणें सबसे तीखी होती हैं, बाहर निकलने से बचने की कोशिश करनी चाहिए। यदि बाहर जाना अनिवार्य हो, तो छाता, टोपी या सूती गमछे का प्रयोग जरूर करें। खान-पान में तली-भुनी चीजों की जगह दही, सलाद और ताजे फलों को शामिल करना शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में मददगार साबित होगा। बच्चों और बुजुर्गों के प्रति विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि वे लू की चपेट में जल्दी आते हैं।

ईरान पर हुए हमलों पर ओआईसी की चुप्पी मुस्लिम जगत के साथ धोखा

-जम्मू-कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने की ओआईसी की आलोचना

श्रीनगर (एजेंसी)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष और जम्मू-कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने मंगलवार को इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) की आलोचना की। उन्होंने ईरान पर अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमलों पर ओआईसी की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए इसे पूरे मुस्लिम जगत के साथ धोखा बताया है। एक्स पर एक पोस्ट के जरिए अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए महबूबा ने कहा कि संकट की इस घड़ी में ओआईसी का मूक दर्शक बने रहना बेहद निराशाजनक है।

उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा- यह बेहद परेशान करने वाला है कि जब अमेरिका और इजराइल ईरान की संप्रभुता के खिलाफ खुलेआम आक्रामकता कर रहे हैं, तब ओआईसी एक मूक दर्शक की भूमिका में है। ईरान के सर्वोच्च नेता की खामेनेई की शहादत पर इसकी चुप्पी और इसका दोष उल्टा ईरान पर ही मढ़ने की कोशिश न केवल

चिंताजनक है, बल्कि बेहद शर्मनाक भी है। महबूबा ने इस बात पर जोर दिया कि ओआईसी को ईरान पर हुए इस दुस्साहसिक हमले की कड़ी निंदा करनी चाहिए थी, लेकिन उसने ईरान पर ही दोष मढ़ने की कोशिश की। ओआईसी के रुख को एपस्टीन गैंग की कार्रवाइयों का परोक्ष समर्थन बताते हुए उन्होंने कहा कि ईरान पर इस खुले हमले की निंदा करने के बजाय उसने चुप्पी साधना चुना है, जो परोक्ष रूप से एपस्टीन गैंग की कार्रवाइयों का समर्थन करता है। यह मुस्लिम समुदाय की सामूहिक अंतरात्मा और हितों के साथ एक बहुत बड़ा विश्वासघात है। ओआईसी पर यह आरोप पहली बार नहीं है। पहले भी कई मौकों पर ओआईसी को पाकिस्तान का प्रॉक्सी बताकर आलोचना की जाती रही है, जहां यह कश्मीर पर भारत-विरोधी बयान जारी करता है, लेकिन अन्य मुस्लिम मुद्दों पर चुप्पी साध लेता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक महबूबा मुफ्ती की यह कड़ी प्रतिक्रिया उन हालिया घटनाक्रमों के बाद सामने आई है, जिनमें शनिवार तड़के अमेरिका और इजराइल द्वारा किए गए संयुक्त हवाई हमलों में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की जान चली गई। इस घटना के बाद से ही वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक तनाव गहरा गया है।

नेपाल चुनाव से पहले सील हुई भारत नेपाल सीमा, वाल्मीकिनगर बॉर्डर पर सन्नाटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेपाल में 5 मार्च को होने वाले संविधान सभा चुनाव को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने के लिए भारत-नेपाल अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए गए हैं। प्रशासनिक आदेशों के तहत वाल्मीकिनगर-त्रिवेणी बॉर्डर सहित अन्य संवेदनशील सीमा क्षेत्रों को 72 घंटे के लिए पूरी तरह सील कर दिया गया है। यह पाबंदी 2 मार्च की मध्यरात्रि 12 बजे से प्रभावी हो चुकी है, जो 5 मार्च की मध्यरात्रि 12 बजे तक जारी रहेगी। इस दौरान सीमा पार से होने वाले सामान्य आवागमन और वाहनों के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है।

नेपाल सशस्त्र पुलिस बल के अधिकारियों के अनुसार, यह कदम चुनाव सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत उठाया गया है। सीमा पर केवल एम्बुलेंस और अन्य अत्यंत आवश्यक आपातकालीन सेवाओं को ही गहन जांच के बाद आने-जाने की अनुमति दी जा रही है। यदि कोई नेपाली मतदाता भारतीय क्षेत्र से मतदान के लिए त्रिवेणी पहुंचता है, तो उसकी नागरिकता और मतदाता पहचान पत्र की कड़ाई से जांच करने के बाद ही उसे प्रवेश दिया जा रहा है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि 6 मार्च की सुबह से सीमा पर स्थिति सामान्य कर दी जाएगी और आवागमन पूर्व की भांति सुचारू हो जाएगा।

चुनाव के मद्देनजर नेपाल सरकार ने सीमावर्ती क्षेत्रों में शराब की बिक्री और वितरण पर भी पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। सीमा पार से किसी भी तरह की अवांछित गतिविधि को रोकने के लिए बिहार पुलिस और सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने संयुक्त रूप से मोर्चा संभाल लिया है। बगहा सहित सीमा से सटे जंगली रास्तों और नदी मार्गों पर गश्त तेज कर दी गई है। स्थानीय पुलिस प्रशासन के अनुसार, सीमावर्ती इलाकों में कड़ी चौकसी बरतने के निर्देश दिए गए हैं ताकि कोई भी असामाजिक तत्व चुनावी प्रक्रिया में बाधा न डाल सके। इस अंतरराष्ट्रीय सीलबंदी का मुख्य उद्देश्य सीमा पार से होने वाली घुसपैठ और तस्करी को रोकना है। नेपाल में संसदीय चुनाव की संवेदनशीलता को देखते हुए दोनों देशों के सुरक्षा निकाय निरंतर संपर्क में हैं। एसएसबी के जवान आधुनिक उपकरणों और खोजी कुत्तों की मदद से हर संदिग्ध गतिविधि पर नजर रख रहे हैं। प्रशासन का स्पष्ट संदेश है कि चुनावी निष्पक्षता बनाए रखने के लिए किसी भी तरह का जोखिम नहीं लिया जाएगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

युद्ध नहीं, शांति ही बदलती दुनिया की अनिवार्य अपेक्षा

(लेखक- ललित गर्ग)

नई बनती दुनिया का चेहरा जितनी तेजी से बदल रहा है, उतनी ही तेजी से वैश्विक असुरक्षा की भावना भी गहराती जा रही है। अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता टकराव केवल क्षेत्रीय संघर्ष नहीं है, बल्कि वह एक ऐसे वैश्विक असंतुलन का संकेत है जिसमें शक्ति संतुलन की पुरानी व्यवस्थाएं टूट रही हैं और नई विश्व-व्यवस्था अभी स्थिर रूप नहीं ले सकी है। जब महाशक्तियां प्रत्यक्ष या परोक्ष युद्ध में उतरती हैं, तब उसका प्रभाव सीमाओं से परे जाकर समूची मानवता को प्रभावित करता है। ऊर्जा बाजार, आपूर्ति श्रृंखलाएं, मुद्रा विनिमय दरें, शेयर बाजार, खाद्य सुरक्षा, शांतिपूर्ण मानव जीवन और कूटनीतिक समीकरण-सब कुछ अनिश्चितता के घेरे में आ जाता है। मध्यपूर्व में किसी भी बड़े युद्ध का पहला असर तेल आपूर्ति पर पड़ता है। होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाली वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति यदि बाधित होती है तो तेल की कीमतें आसमान छूने लगती हैं। भारत जैसे ऊर्जा-आयातक देश के लिए यह स्थिति दोहरी चुनौती लेकर आती है-एक ओर आयात बिल बढ़ता है, दूसरी ओर महंगाई और राजकोषीय दबाव में वृद्धि होती है। यदि कच्चे तेल के दाम बढ़ते हैं तो परिवहन, उर्वरक, बिजली और विनिर्माण लागत में वृद्धि अनिवार्य है, जिसका सीधा असर आम नागरिक की जेब पर पड़ता है। वैश्विक वित्तीय बाजार पहले ही अनिश्चितता से जूझ रहे हैं, ऐसे में लंबा खिंचता युद्ध निवेश और विकास की गति को भी धीमा कर सकता है।

ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ता टकराव केवल दो देशों का संघर्ष नहीं, बल्कि बदलती विश्व-व्यवस्था की परीक्षा है। ऐसे समय में युद्ध को तेज़ करने के बजाय उसे रोकने की कोशिशों को और अधिक गति देने की आवश्यकता है। दोनों पक्षों से परिपक्वता और संयम की अपेक्षा है, विशेषकर अमेरिका से, जो स्वयं को वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में देखता है और जिसे शक्ति के साथ-साथ जिम्मेदारी का भी परिचय देना चाहिए। एक तेल उत्पादक देश के रूप में ईरान का अस्तित्व और स्थिरता विश्व अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है; वहां की अस्थिरता ऊर्जा बाजार से लेकर विकासशील देशों की वित्तीय संरचना तक को प्रभावित कर सकती है। हालिया हमलों में सैकड़ों लोगों के मारे जाने, हजारों के घायल होने और बड़ी संख्या में लोगों के फंसे होने की खबरें मानवता के लिए गहरी चिंता का विषय हैं। ईरान में शीर्ष नेतृत्व पर हमलों और उसके बाद तेहरान आदि मुस्लिम देशों की तीखी प्रतिक्रियाओं ने पश्चिम एशिया के हालात को और अधिक विस्फोटक बना दिया है। यह संघर्ष केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा; इसका प्रभाव दक्षिण एशिया की भू-राजनीति, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, वैश्विक कूटनीतिक संतुलन और विश्व अर्थव्यवस्था पर दूरगामी होगा।

युद्ध आर्थिक संकट ही नहीं लाता, वह सामाजिक ताने-बाने को तोड़ता है, सांस्कृतिक संवाद को बाधित करता है और राष्ट्रों के बीच अविश्वास की दीवारें ऊंची करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बदलती दुनिया में सह-अस्तित्व, संवाद और बहुपक्षीय सहयोग की भावना को पुनर्जीवित किया जाए। शक्ति प्रदर्शन के स्थान पर समझदारी, प्रतिशोध के स्थान पर कूटनीति और वर्चस्व के स्थान पर साझी जिम्मेदारी-इन्हीं मूल्यों से विश्व को स्थिरता मिल सकती है। यह संघर्ष केवल आर्थिक नहीं, बल्कि वैचारिक और भू-राजनीतिक भी है। यूक्रेन संकट के बाद विश्व पहले ही ध्रुवीकरण की दिशा में बढ़ चुका था। अब यदि पश्चिम एशिया में स्थायी अस्थिरता पैदा होती है तो वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए संतुलन साधना कठिन हो जाएगा। भारत एक ओर अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी बढ़ा रहा है, तो दूसरी ओर ईरान के साथ उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और ऊर्जा संबंध भी रहे हैं। इसके साथ ही इजरायल के साथ रक्षा और तकनीकी सहयोग भी मजबूत हुआ है। ऐसे में किसी एक पक्ष के साथ खुलकर खड़े होना भारत की बहुस्तरीय विदेश नीति के लिए जटिल प्रश्न बन सकता है।

भारत की विशेष चिंता यह भी है कि मध्यपूर्व में लगभग 90 लाख भारतीय कार्यरत हैं। यदि युद्ध की आग फैलती है तो न केवल उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ेगी, बल्कि भारत को मिलने वाली अरबों डॉलर की प्रेषण राशि पर भी प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, लाल सागर और खाड़ी क्षेत्र में समुद्री मार्गों पर तनाव बढ़ने से व्यापारिक शिपमेंट महंगे हो सकते हैं। यह परिस्थिति भारत के विकास पथ पर दबाव डाल सकती है, जो अभी विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जा रहा है। ऐसे समय में भारत की भूमिका केवल एक प्रभावित राष्ट्र की नहीं, बल्कि एक संभावित मध्यस्थ और संतुलनकर्ता की भी हो सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले वर्षों में बहुध्रुवीय कूटनीति की जो नीति अपनाई है, वह इसी प्रकार की जटिल परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। भारत ने एक ओर अमेरिका के साथ सामरिक साझेदारी को सुदृढ़ किया है, वहीं रूस से ऊर्जा सहयोग बनाए रखा है और पश्चिम एशिया के देशों के साथ भी संतुलित संबंध कायम रखे हैं। यह 'रणनीतिक स्वायत्तता' की नीति भारत को किसी एक खेमे में बंधने से बचाती है। भारत का यह दृष्टिकोण उसे संवाद और शांति प्रयासों के लिए विश्वसनीय मंच प्रदान कर सकता है।

भारत इस समय ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है, जिसमें ईरान भी सदस्य बन चुका है। यह मंच वैश्विक दक्षिण की आवाज को सशक्त करने का अवसर देता है। यदि भारत इस मंच के माध्यम से युद्धविराम, संवाद और बहुपक्षीय समाधान की पहल करता है, तो वह न केवल अपनी कूटनीतिक विश्वसनीयता बढ़ा सकता है, बल्कि वैश्विक स्थिरता में भी योगदान दे सकता है। संयुक्त राष्ट्र की निष्क्रियता या सीमित प्रभाव के बीच मध्यम शक्तियों की भूमिका बढ़ना स्वाभाविक है। भारत, जो स्वयं उपनिवेशवाद और शीत युद्ध की राजनीति से सीख लेकर उभरा है, शांति-आधारित बहुपक्षवाद का पक्षधर बन सकता है। दूसरी ओर, दक्षिण एशिया में भी चुनौतियां कम नहीं हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच बढ़ते तनाव और आंतरिक अस्थिरता का प्रभाव भारत की सुरक्षा और क्षेत्रीय संतुलन पर पड़ सकता है। यदि पश्चिम एशिया में अस्थिरता बढ़ती है और साथ ही दक्षिण एशिया में भी उथल-पुथल होती है, तो भारत को दो मोर्चों पर रणनीतिक सतर्कता रखनी होगी। आतंकवाद, कट्टरता और अवैध हथियारों का प्रसार ऐसे वातावरण में बढ़ सकता है। अतः भारत के लिए यह समय केवल आर्थिक प्रबंधन का नहीं, बल्कि सुरक्षा और कूटनीतिक संयम का भी है।

समाधान क्या हो सकता है? प्रथम, युद्धविराम और संवाद की बहुपक्षीय पहल को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वैश्विक शक्तियों को यह समझना होगा कि स्थायी शांति केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि राजनीतिक समझौते और पारस्परिक सम्मान से आती है। द्वितीय, ऊर्जा आपूर्ति के वैकल्पिक स्रोतों और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश को तेज करना होगा, ताकि तेल-निर्भरता कम हो और भू-राजनीतिक संकटों का असर सीमित किया जा सके। तृतीय, वैश्विक संस्थाओं का पुनर्गठन आवश्यक है, ताकि वे केवल महाशक्तियों के प्रभाव का साधन न बनकर न्यायपूर्ण और प्रभावी मंच बन सकें। चतुर्थ, क्षेत्रीय संवाद मंचों-जैसे ब्रिक्स, जी-20 और शंघाई सहयोग संगठन को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। भारत के लिए भी यह अवसर है कि वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अपनी परंपरा को व्यवहार में उतारे। शांति, सहअस्तित्व और संवाद का संदेश केवल भाषणों तक सीमित न रहकर ठोस कूटनीतिक पहलों में दिखना चाहिए। यदि भारत ऊर्जा विविधीकरण, रक्षा आत्मनिर्भरता, डिजिटल और हरित अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाता है, तो वह वैश्विक संकटों के बीच भी स्थिरता बनाए रख सकता है। प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति की सक्रियता-चाहे वह बहुपक्षीय मंचों पर भागीदारी हो या क्षेत्रीय देशों के साथ प्रत्यक्ष संवाद-भारत की अस्मिता और हितों की रक्षा के प्रयास का संकेत देती है।

निश्चित तौर पर युद्ध किसी भी देश के लिए स्थायी लाभ का माध्यम नहीं बन सकता। इतिहास गवाह है कि शक्ति-प्रदर्शन से अस्थायी विजय मिल सकती है, किंतु स्थायी शांति केवल न्याय, संवाद और सहयोग से ही आती है। नई बनती दुनिया को यदि स्थिर और मानवीय बनाना है, तो उसे हथियारों की दौड़ से आगे बढ़कर सहअस्तित्व की संस्कृति अपनानी होगी। भारत, जो स्वयं विविधता और सहिष्णुता का प्रतीक है, इस परिवर्तन का अग्रदूत बन सकता है। चुनौती बड़ी है, किंतु अवसर भी उतना ही व्यापक है-शर्त यह है कि विश्व नेतृत्व युद्ध की भाषा छोड़कर शांति की भाषा सीखे और भारत अपने संतुलित, स्वायत्त और दूरदर्शी दृष्टिकोण से इस वैश्विक उथल-पुथल में स्थिरता का स्तंभ बने।

भारत की विशेष चिंता यह भी है कि मध्यपूर्व में लगभग 90 लाख भारतीय कार्यरत हैं। यदि युद्ध की आग फैलती है तो न केवल उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ेगी, बल्कि भारत को मिलने वाली अरबों डॉलर की प्रेषण राशि पर भी प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, लाल सागर और खाड़ी क्षेत्र में समुद्री मार्गों पर तनाव बढ़ने से व्यापारिक शिपमेंट महंगे हो सकते हैं। यह परिस्थिति भारत के विकास पथ पर दबाव डाल सकती है, जो अभी विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जा रहा है।

संपादकीय

आर्थिक उथल-पुथल

भले ही, दुनिया में चौधराहट बनाये रखने और साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा करने के लिए अमेरिका ने इस्राइल के साथ मिलकर ईरान पर युद्ध थोपा हो, मगर इस युद्ध के दूरगामी घातक परिणाम पूरी दुनिया को झेलने होंगे। इस संघर्ष ने पूरे पश्चिमी एशिया को गहरे संकट में डाल दिया है। तबाही के कगार पर खड़े ईरान ने जिस तरह अपने पड़ोसी देशों के व्यापारिक व औद्योगिक संस्थानों पर ताबड़-तोड़ हमले किए हैं, उससे मध्यपूर्व में बड़ा आर्थिक संकट पैदा हो गया है। लाखों लोगों के रोजगार पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। खासकर लाखों भारतीय कामगारों के लिये बड़ा संकट पैदा हो गया है। ईरान की जवाबी कार्रवाई से पश्चिमी एशिया में बढ़ते संकट से, इस क्षेत्र में आर्थिक उथल-पुथल मची हुई है। दुनिया के प्रमुख वैश्विक जहाजरानी मार्गों पर मंडरा रहे खतरे के बीच ऊर्जा बाजार की स्थिति पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। होर्मुज जलडमरूमध्य के पास हुए हमलों के कारण कच्चे तेल और द्रवीकृत प्राकृतिक गैस यानी एलएनजी की ढुलाई पहले ही बाधित हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि होर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक तेल आपूर्ति के लगभग पांचवें हिस्से के लिये एक रणनीतिक मार्ग है। लेकिन मौजूदा युद्ध से उपजे हालात में जहाज बीमा कंपनियों ने युद्ध-जोखिम कवरेज वापस ले लिया है। इसके चलते पेट्रोलियम पदार्थों व अन्य उत्पादों की माल ढुलाई लागत बढ़ रही है। युद्ध की विभीषिका के चलते तमाम जहाजों ने अपने मार्ग बदल लिए हैं। कुछ जहाज चलाने वाली कंपनियों ने अपने जहाजों के परिचालन पर रोक लगा दी है। इसका तात्कालिक परिणाम यह है कि कच्चे तेल की कीमतों में काफी उछाल देखा जा रहा है। जिसके चलते ब्रेंट क्रूड की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि देखी जा रही है। इसमें दो राय नहीं कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें आने वाले दिनों में विश्व स्तर पर मुद्रास्फीति के दबाव को बढ़ाएंगी। जाहिरा तौर पर विकासशील व गरीब देशों का आर्थिक संकट और गहरा हो जाएगा। वहीं दूसरी ओर विकासशील देशों की सरकारों के सामने विकास कार्यक्रमों के लिये वित्तीय संसाधन जुटाना अब एक बड़ी चुनौती होगी। वहीं इन देशों में केंद्रीय बैंकों के लिये भी मुद्रास्फीति और विकास के बीच संतुलन बनाये रखना मुश्किल हो जाएगा। दरअसल, हाल के दिनों में पेट्रोलियम और उसके उत्पादों पर निर्भर परिवहन, रसायन और प्लास्टिक उद्योग तक को बढ़ती लागत का सामना करना पड़ रहा है। जाहिर है इससे इन उद्योगों के लाभ में कमी आ सकती है। साथ ही इन उद्योगों में निवेश धीमा हो सकता है। वहीं दूसरी ओर आपूर्ति में देरी से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की समस्याएं और भी बढ़ सकती हैं। यह सर्वविदित है कि आज भी भारत अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिये कच्चे तेल का अस्सी से नब्बे प्रतिशत आयात करता है। इस कच्चे तेल का करीब चालीस फीसदी हिस्सा पश्चिमी एशिया से आता है। मौजूदा विषम परिस्थितियों के बीच होर्मुज जलमार्ग में व्यवधान तथा भू-राजनीतिक जोखिमों में वृद्धि से भारत के तेल आयात बिल के बढ़ने की आशंका बढ़ गई है। वहीं इसके साथ ही देश का राजकोषीय घाटा भी बढ़ सकता है। यहां तक कि कच्चे तेल के दाम में दस डॉलर प्रति बैरल की वृद्धि भी आयात लागत को काफी हद तक बढ़ा सकती है। मौजूद संकट के बीच, विशेष रूप से खाड़ी क्षेत्र को निर्यात के लिये बने व्यापार गलियारे आज जटिल परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर होर्मुज जलमार्ग और आगे के माल ढुलाई नेटवर्क के माध्यम से शिपिंग पर निर्भर इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य वस्तुओं के निर्यात में देरी से लागत के बढ़ने की आशंका है। साथ ही अवसरों के नुकसान होने का खतरा बढ़ रहा है।

रक्त, शक्ति और मानवता की पुकार

(लेखक-- डॉ. प्रियंका सौरभ)

(वैश्विक राजनीति में नैतिकता, हस्तक्षेप और उत्तरदायित्व का प्रश्न)

बीसवीं सदी का मध्य मानव इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने अगस्त 1945 में जापान के नगर हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए, तब केवल दो नगर नष्ट नहीं हुए, बल्कि पूरी मानव सभ्यता ने अपनी ही निर्मित विनाशकारी शक्ति का भयावह स्वरूप देखा। लाखों लोग तत्काल मारे गए और असंख्य लोग विकिरण के दीर्घकालिक प्रभाव से वर्षों तक पीड़ित रहे। इस घटना ने द्वितीय विश्व युद्ध को समाप्त करने में भूमिका निभाई, किंतु साथ ही यह प्रश्न भी छोड़ गई कि क्या किसी भी परिस्थिति में इतना व्यापक संहार उचित ठहराया जा सकता है।

इसके बाद विश्व राजनीति ने एक नया रूप धारण किया। एक ओर संयुक्त राज्य अमेरिका था और दूसरी ओर सोवियत संघ। वैचारिक संघर्ष ने संसार को दो गुटों में विभाजित कर दिया। इसी पृष्ठभूमि में 1950 से 1953 तक चला कोरियाई युद्ध केवल कोरिया की भूमि का संघर्ष नहीं था, बल्कि दो विचारधाराओं की टकराहट था। इस युद्ध ने कोरियाई प्रायद्वीप को स्थायी रूप से दो भागों में बाँट दिया और असंख्य परिवारों को पीड़ा दी।

इसके कुछ वर्षों बाद 1955 से 1975 तक चला वियतनाम युद्ध विश्व इतिहास के अत्यंत विवादास्पद संघर्षों में गिना जाता है। व्यापक बमवर्षा, रासायनिक पदार्थों का प्रयोग और ग्रामीण अंचलों का विध्वंस इस युद्ध की पहचान बन गए। इस संघर्ष ने न केवल वियतनाम को गहरी क्षति पहुँचाई, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर भी व्यापक जनविरोध और नैतिक मंथन को जन्म दिया।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में 2003 में आरंभ हुआ इराक युद्ध इस तर्क के साथ प्रारंभ किया गया कि वहाँ व्यापक विनाश के हथियार मौजूद हैं और विश्व सुरक्षा को गंभीर खतरा है। किंतु समय के साथ ऐसे हथियारों के स्पष्ट प्रमाण सामने नहीं आए। परिणामस्वरूप इराक की राजनीतिक संरचना अस्थिर हो गई, सांप्रदायिक हिंसा में वृद्धि हुई और पूरे क्षेत्र में असुरक्षा का वातावरण फैल गया।

2001 से 2021 तक चला अफगानिस्तान का युद्ध आतंकवाद के विरुद्ध अभियान के रूप में प्रारंभ हुआ। उद्देश्य था उन शक्तियों को समाप्त करना जिन्हें वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए खतरा माना गया। परंतु दो दशकों के लंबे संघर्ष, भारी आर्थिक व्यय और असंख्य जनहानि के उपरांत भी स्थायी शांति स्थापित नहीं हो सकी। अंततः विदेशी सेनाओं की वापसी के बाद वही संगठन पुनः सत्ता में आ गया जिसे हटाने के लिए यह अभियान आरंभ किया गया था।

मध्य और पश्चिम एशिया में उभरे उग्रवादी संगठन केवल किसी एक राष्ट्र की नीतियों का परिणाम नहीं थे। उनके उदय के पीछे क्षेत्रीय अस्थिरता, धार्मिक कट्टरता, आर्थिक विषमता, बाहरी हस्तक्षेप और सत्ता का रिक्त स्थान जैसे अनेक कारण रहे। फिर भी यह धारणा व्यापक है कि महाशक्तियों की नीतियों और युद्धों ने ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कीं जिनमें उग्रवाद को पनपने का अवसर मिला।

लैटिन अमेरिका के अनेक देशों में भी बीसवीं सदी के दौरान राजनीतिक उथल-पुथल देखी गई। विभिन्न समयों पर बाहरी प्रभावों और गुप्त हस्तक्षेपों के आरोप लगे। कुछ स्थानों पर सैन्य शासन स्थापित हुए, तो कहीं लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ कमजोर पड़ीं। इन घटनाओं ने यह धारणा सुदृढ़ की कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आदर्शों की अपेक्षा सामरिक और आर्थिक हितों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

तेल, प्राकृतिक संसाधन, व्यापार मार्ग और सामरिक ठिकाने आधुनिक विश्व व्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक हैं। आलोचकों का मत है कि कई बार जनतंत्र, मानवाधिकार और शांति की भाषा इन हितों को वैध ठहराने का माध्यम बन जाती है। समर्थकों का तर्क है कि वैश्विक सुरक्षा, आतंकवाद-निरोध और सहयोगी राष्ट्रों की रक्षा भी समान रूप से आवश्यक चिंताएँ हैं।

सत्य संभवतः इन दोनों दृष्टिकोणों के मध्य स्थित है। किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति पूर्णतः नैतिक या पूर्णतः स्वार्थप्रधान नहीं होती; वह परिस्थितियों, आशंकाओं, अवसरों और रणनीतिक विचारों का सम्मिलित परिणाम होती है। फिर भी यह प्रश्न बार-बार उभरता है कि क्या राष्ट्रीय हित की रक्षा के नाम पर व्यापक जनसंहार और दीर्घकालिक अस्थिरता को स्वीकार किया जा सकता है।

जनतंत्र और मानवाधिकार केवल औपचारिक शब्द नहीं होने चाहिए, बल्कि वे ऐसे सार्वभौमिक मूल्य बनें जिनका पालन मित्र और विरोधी—दोनों के प्रति समान रूप से किया जाए। यदि शक्ति का प्रयोग चयनात्मक नैतिकता के आधार पर किया जाएगा, तो विश्व समुदाय में अविश्वास, असंतोष और वैमनस्य की भावना प्रबल होगी।

इतिहास यह शिक्षा देता है कि सैन्य विजय स्थायी समाधान प्रदान नहीं करती। स्थायी शांति संवाद, सहयोग, आर्थिक न्याय और सांस्कृतिक सम्मान से ही संभव होती है। किसी भी महाशक्ति की वास्तविक परीक्षा रणभूमि में नहीं, बल्कि इस तथ्य में निहित है कि वह अपनी शक्ति का उपयोग कितनी जिम्मेदारी, पारदर्शिता और मानवीय संवेदनशीलता के साथ करती है।

आज का विश्व अब भी संघर्षों, प्रतिस्पर्धा और असुरक्षा से घिरा हुआ है। ऐसे समय में आवश्यक है कि अतीत की त्रासदियों से सीख लेकर भविष्य की नीतियों का निर्माण किया जाए। यदि मानव जीवन को सर्वोच्च मूल्य माना जाए और शक्ति को उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए, तभी एक अधिक न्यायपूर्ण, संतुलित और शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था की कल्पना साकार हो सकती है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

सन्मार्ग की प्रवृत्ति

उत्तम कार्य की कार्य प्रणाली भी प्रायः उत्तम होती है। दूसरों की सेवा या सहायता करनी है, तो प्रायः मधुर भाषण, नम्रता, दान, उपहार आदि द्वारा उसे संतुष्ट किया जाता है। परन्तु कई बार इसके विपरीत क्रिया-प्रणाली ऐसी कठोर, तीक्ष्ण एवं कटु बनानी पड़ती है कि लोगों को भ्रम हो जाता है कि कहीं यह दुर्भाव से प्रेरित होकर तो नहीं किया गया। ऐसे अवसरों पर वास्तविकता का निर्णय करने में बहुत सावधानी बरतने पड़ती है। सीधे-सादे अवसरों पर सीधी-सादी प्रणाली से भली प्रकार काम चल जाता है। भूखे, प्यासे की सहायता करनी है, तो वह कार्य अन्न-जल देने के सीधे-सादे तरीके से चल जाता है। किसी दुःखी या अभावग्रस्त को अभीष्ट वस्तुएं देकर उसकी सेवा की जा सकती है। धर्मशाला, कुआं, पाठशाला, अनाथालय, औषधालय आदि द्वारा लोकसेवा की जा सकती है। ऐसे कार्य निश्चय ही श्रेष्ठ हैं और उनकी आवश्यकता व उपयोगिता सर्वत्र स्वीकारी जा सकती है। परन्तु कई बार ऐसी सेवा की भी बड़ी आवश्यकता होती है, जो प्रत्यक्ष में बुराई मालूम पड़ती है और उसे करने वाले को अपयश ओढ़ना पड़ता है। इस मार्ग को अपनाने का साहस हर किसी में नहीं होता। दुष्ट और अज्ञानियों को उस मार्ग से छुड़ाना, जिस पर वे बड़ी ममता और अहंकार के साथ प्रवृत्त हो रहे हैं, साधारण काम नहीं है। सीधे आदमी की भूल ज्ञान से, तर्क से, समझाने से सुधर जाती है पर जिनकी मनोभूमि अज्ञानान्धकार से कलुषित हो, साथ ही जिनके पास कुछ शक्ति भी है, वे ऐसे मदान्ध हो जाते हैं कि सीधी-सादी क्रिया-प्रणाली का उन पर प्रायः कुछ असर नहीं होता। मनुष्य शरीर धारण करने पर भी जिनमें पशुत्व की प्रधानता है, दुनिया में उनकी कमी नहीं है। उन्हें ज्ञान, तर्क, नम्रता, सज्जनता, सहनशीलता से अनीति के दुःखदाई मार्ग से पीछे नहीं हटाया जा सकता। पशु केवल दो चीजें पहचानता है- एक लोभ, दूसरा भय। दाना, घास खिला उसे ललचा कर कहीं भी ले जाइए, वह पीछे-पीछे चलेगा या लाठी का डर दिखा जिधर चाहे उधर ले जा सकते हैं। भय या लोभ से अज्ञानियों को, कुमार्गगामियों को सन्मार्ग में प्रवृत्त किया जा सकता है। भय उत्पन्न करने के लिए दंड का आश्रय लिया जाता है। लोभ के लिए कोई ऐसा आकर्षण उसके सामने उपस्थित करना पड़ता है जो आज की अपेक्षा अधिक सुखदायी हो। नशेबाजी, व्यभिचार आदि के दुष्परिणाम को बढ़ा-चढ़ाकर, बताकर कई बार उस ओर चलने वालों को इतना डरा दिया जाता है कि वे उसे स्वतः छोड़ देते हैं।

विचार मंथन

अमेरिका और इजराइल पर भारी पड़ा ईरान?

(लेखक- सनत जैन)

ईरान पर इजराइल और अमेरिका द्वारा किए गए संयुक्त हमले के तीसरे दिन स्थिति बड़ी विकराल हो गई है। ईरान के सुप्रीमो लीडर खामेनेई की हत्या के बाद ईरान ने जिस तरह का पलटवार किया है, उससे दुनियां हैरान है। एक ही झटके में 13 देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानो पर ईरान ने हमला कर दिया। अमेरिका के सैन्य ठिकाने धू-धू करके जलने लगे। इन हमलों से मध्य पूर्व के इस्लामी देशों में बढ़ता तनाव एक बार फिर वैश्विक राजनीति के केंद्र में आ गया है। ईरान ने अमेरिका और इजराइल के हमले का जवाब जिस तरह से दिया है, उसे देखते हुए अमेरिका और इजराइल भी हतप्रभ होकर रह गए हैं। पहली बार अमेरिका को पश्चिम एशिया के देशों में तनाव बढ़ने से अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। ईरान की ओर से दावा किया गया है, उसने जवाबी कार्रवाई में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया। बहरीन स्थित जुफैर बेस और क़तर के अल उदैद एयरबेस जैसे ठिकानों पर किए गए हमले के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए जिनमें भारी नुकसान की तस्वीरें सामने आई हैं। इसके बाद सारी दुनिया में एक नई हलचल देखने को मिली। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने संकेत दिया है। क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकाने उसकी मिसाइलों के निशाने पर हैं। दूसरी ओर, क़तर ने दावा किया, पैट्रियट मिसाइल डिफेंस सिस्टम ने संभावित हमलों को विफल कर बड़े नुकसान को रोका है। ऐसे परस्पर विरोधी दावों के बीच वास्तविक स्थिति का सही अंदाजा लगा पाना कठिन है। यह भी चर्चा है कि खाड़ी क्षेत्र के लगभग 13 देशों में अमेरिकी सैन्य मौजूदगी है। तनाव बढ़ने पर वह भी अप्रत्यक्ष रूप से इस संघर्ष की चपेट में आ सकते हैं। ईरान ने जो फोटो और वीडियो जारी किए हैं उसके अनुसार 13 देशों के ठिकाने धू-धू करके जल रहे हैं। अभी तक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा ईरान के दावों को सत्यापित नहीं किया गया है। युद्धकालीन माहौल में सूचनाओं का प्रवाह तेज होता है, परंतु सत्यापन की जानकारी जुटाना बहुत मुश्किल होता है। रणनीतिक दृष्टि से देखें, तो ईरान का मुकाबला दो परमाणु-सक्षम अमेरिका और इजराइल से है। इसके बावजूद तेहरान की त्वरित जवाबी क्षमता ने यह साबित कर दिया है। युद्ध के मैदान में सैन्य संतुलन एकतरफा नहीं है। चार दिन में ईरान इस युद्ध में अमेरिका और इजराइल को बराबरी से जवाब देने में सक्षम है।

सवाल यह है, क्या यह टकराव सीमित रहेगा या व्यापक वैश्विक युद्ध के रूप में परिवर्तित हो जाएगा? इस युद्ध की शुरुआत से ही कच्चे तेल की आपूर्ति, समुद्री मार्गों को ईरान द्वारा बाधित किए जाने से वैश्विक बाजारों पर इसका प्रभाव पहले ही चार दिनों में बड़े पैमाने पर दिखने लगा है। विशेषज्ञों का मानना है, सैन्य शक्ति के प्रदर्शन से अधिक महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपाय अपनाने की पहल तुरंत की जानी चाहिए। यदि संवाद के रास्ते नहीं खुले, तो दावों और प्रतिदावों के बीच पूरी दुनिया को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। दुनिया भर के शेयर बाजार में गिरावट देखने को मिल रही है। भारत का शेयर बाजार एक तरह से क्रेस हो गया है। खाड़ी देशों में भारत का निर्यात-आयात पिछले चार दिनों से एक तरह से बंद हो गया है। लगभग 90 लाख भारतीय खाडी के देशों में काम करते हैं। इसके अलावा दुबई में भी भारतीयों का भारी निवेश है। ईरान जिस तरह से यूएई को निशाना बना रहा है उसके कारण भारत की आर्थिक सामरिक एवं राजनीतिक स्थिति पर चुनौतियां स्पष्ट रूप से दिखने लगी हैं। अमेरिका ईरान युद्ध शुरू होने के बाद जिस तरह से भारत के शेयर बाजार में निवेशकों को लगभग 8 लाख करोड रुपए का नुकसान 1 दिन में उठाना पड़ा है, वैश्विक व्यवस्था में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की आपूर्ति में जो रोक लगी है, सारी दुनिया का आयात और निर्यात व्यापार बुरी तरह से प्रभावित हुआ है, इसको लेकर आर्थिक विशेषज्ञों द्वारा यह आशंका जताई जा रही है कि यह युद्ध जल्द बंद नहीं हुआ तो सारी दुनिया के देश आर्थिक मंदी के शिकार हो जाएंगे। इसके साथ-साथ तृतीय विश्व युद्ध जैसी स्थितियां बनते देर नहीं लगेंगी। सबसे बड़ी चिंता का विषय यह है भारत स्वयं एक पार्टी बन गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इजाराइल दौरे के तुरंत बाद ईरान पर हमला किया गया है। भारत की विदेश नीति में अब भारत का झुकाव अमेरिका और इजराइल की तरफ है। ऐसी स्थिति में भारत के ईरान और खाड़ी देशों के साथ बेहतर संबंध होते हुए भी भारत की मध्यस्थ के रूप में कोई भूमिका सामने नहीं आ रही है। उल्टे इस युद्ध में भारत को युद्ध में शामिल नहीं होते हुए भी भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। खाड़ी के देशों में लगभग 90 लाख से ज्यादा भारतीय नागरिक कार्यरत है उनसे विदेशी मुद्रा भी भारत को मिलती थी अब उनकी जान जोखिम में है। कच्चे तेल और गैस के दामों में जिस तरह की तेजी देखने को मिल रही है, शेयर बाजारों में जिस तरह से गिरावट का दौर देखने को मिल रहा है उससे स्पष्ट हो गया है, इस युद्ध का असर भारत पर सबसे ज्यादा पड़ने वाला है। भारत सरकार को बहुत सजग रहने की जरूरत है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पश्चिम एशिया संघर्ष से भारत की अर्थव्यवस्था पर खतरा: रिपोर्ट

- बीएमआई ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए आर्थिक वृद्धि का अनुमान 7 फीसदी बरकरार रखा

नई दिल्ली । फिच ग्रुप की इकाई बीएमआई ने चेताया है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष से भारत में निवेश प्रभावित हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, इससे अमेरिका और यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ व्यापार समझौतों का जीडीपी पर सकारात्मक असर कम हो सकता है। बीएमआई ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए आर्थिक वृद्धि का अनुमान 7 फीसदी बरकरार रखा, लेकिन भू-राजनीतिक जोखिमों के कारण भविष्य में बदलाव की संभावना जताई। होर्मुज जलडमरूमध्य फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है और वैश्विक तेल एवं गैस आपूर्ति का महत्वपूर्ण मार्ग है। बीएमआई ने कहा कि यदि यह मार्ग बंद होता है, तो तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण भारतीय जीडीपी पर 0.5 फीसदी तक नकारात्मक असर पड़ सकता है। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 88 फीसदी आयात करता है जिससे आयात बिल और ईंधन महंगाई बढ़ सकती है। 28 फरवरी को अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर सैन्य कार्रवाई की। इसके जवाब में ईरान ने खाड़ी क्षेत्र में ड्रोन और मिसाइल हमले किए और जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों को चेतावनी दी। भारत और अमेरिका ने अंतरिम व्यापार समझौते की रूपरेखा पर सहमति जताई, जिसमें शुल्क घटाकर 18 फीसदी करने का प्रस्ताव है। वहीं भारत-ईयू मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर जनवरी में सहमति बनी, जिसे कानूनी अनुमोदन मिलने के बाद एक वर्ष में लागू किया जाएगा।

ईरान संकट से प्रभावित भारतीय चाय निर्यात, भाड़ा और भुगतान पर दबाव

नई दिल्ली । भारतीय चाय निर्यातक संघ के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ईरान को भेजी गई चाय के भुगतान अटके हुए हैं। कुछ खेप समुद्र में फंसी हैं और भारत में स्टॉक के रूप में खड़ा है। निर्यातक फिलहाल स्थिति का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि असर केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा, अमेरिका और यूरोप जैसे अन्य बाजारों पर भी अल्पकाल में प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि हालात अव्यवस्थित हैं। इस सप्ताह कुछ खेप पश्चिम एशिया के लिए जाने वाली थीं, लेकिन खरीदारों ने उन्हें रोकने की सलाह दी। कंपनी का लगभग 70 फीसदी उत्पादन पश्चिम एशिया को निर्यात होता है। दक्षिण भारत चाय निर्यातक संघ के मुतो बिक पूरे पश्चिम एशिया में आपूर्ति मुख्य रूप से होर्मुज स्ट्रेट या खाड़ी के बंदरगाहों पर निर्भर है, जिन पर ईरान के हमले से अस्थिरता बढ़ी है। शिपिंग लाइनें कार्गो लेना बंद कर रही हैं और अतिरिक्त सरचार्ज पर विचार कर रही हैं। भाड़ा और बीमा लागत में बढ़ोतरी की संभावना है। चाय बोर्ड के अनुसार, भारत के कुल चाय निर्यात का लगभग 41 फीसदी हिस्सा खाड़ी देशों को जाता है। 2025 में केवल यूएई, ईरान और इराक को भारत का निर्यात 11.45 करोड़ किलोग्राम रहा, जबकि कुल निर्यात 28.04 करोड़ किलोग्राम था। संकट के कारण अल्पकाल में अमेरिका और यूरोप जैसे बाजारों में भी शिपिंग और लीड समय प्रभावित हो सकता है।

महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता का नया रास्ता, एलआईसी की 'बीमा सखी योजना'

- ट्रेनिंग के दौरान हर महीने स्टाइपेंड, बाद में कमीशन और इंसेंटिव से असीमित कमाई का अवसर

नई दिल्ली । देश की दिग्गज बीमा कंपनी लाइफ इंस्योरेंस आफ इं डिया (एलआईसी) ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से 'बीमा सखी योजना' शुरू की है। इस पहल का मकसद उन महिलाओं को रोजगार का अवसर देना है, जो कम पढ़ी-लिखी हैं या घरेलू जिम्मेदारियों के साथ अपनी अलग पहचान बनाना चाहती हैं। योजना के तहत महिलाओं को एलआईसी एजेंट बनने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस योजना की सबसे बड़ी खासियत यह है कि प्रशिक्षण अवधि में भी महिलाओं को निश्चित मासिक स्टाइपेंड दिया जाएगा। पहले वर्ष में 7,000 रुपये प्रति माह, दूसरे वर्ष में 6,000 रुपये और तीसरे वर्ष में 5,000 रुपये प्रतिमाह प्रदान किए जाएंगे। यह आर्थिक सहयोग प्रशिक्षण के दौरान आत्मविश्वास बढ़ाने और शुरुआती जरूरतों को पूरा करने में मदद करेगा। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद प्रतिभागी प्रोफेशनल एजेंट के रूप में कार्य कर सकेंगी। इसके बाद उनकी आय कमीशन और इंसेंटिव पर आधारित होगी, जिसकी कोई ऊपरी सीमा नहीं है। निर्धारित लक्ष्य हासिल करने पर आकर्षक बोनस भी मिलेगा। योजना का लाभ लेने के लिए महिला की आयु 18 से 70 वर्ष के बीच होनी चाहिए और न्यूनतम योग्यता 10वीं पास आवश्यक है। हालांकि, जो महिलाएं पहले से एलआईसी की कर्मचारी या एजेंट हैं, वे पात्र नहीं होंगी।

प्लैटिनम के भाव सपाट, सोने के बढ़ते दामों से बढ़ी मांग

- दिल्ली में 1 ग्राम प्लैटिनम की कीमत 6,976 रुपए

मुंबई । बुलियन मार्केट में मंगलवार को प्लैटिनम के भाव फ्लैट रहे। दिल्ली में 1 ग्राम प्लैटिनम की कीमत 6,976 रुपए है, यानी 10 ग्राम की कीमत 69,760 रुपए है। मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद, कोलकाता, जयपुर, भोपाल और इंदौर में भी 1 ग्राम का रेट समान 6,976 रुपए रहा। होली से पहले प्लैटिनम के भाव में कोई बड़ी हलचल नहीं देखी गई और कल के भाव पर ही कीमत स्थिर रही। सोने के दाम लगातार ऊंचे बने हुए हैं। 10 ग्राम सोने की कीमत लगभग 1,60,000 रुपए तक पहुंच गई है, जबकि 10 ग्राम प्लैटिनम लगभग 66,800 रुपए में उपलब्ध है। इस बड़ा अंतर कई खरीदारों को प्लैटिनम ज्वैलरी की ओर आकर्षित कर रहा है। प्लैटिनम का लुक मॉडर्न और अलग होता है, इसलिए खासकर युवा इसे पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा प्लैटिनम की रीसेल वैल्यू भी मिलती है, और कीमत सोने की तुलना में कम होने के कारण यह निवेश और ज्वैलरी दोनों के लिए आकर्षक विकल्प बन गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि प्लैटिनम का

भाव अंतरराष्ट्रीय बाजार और मांग पर निर्भर करता है। इसलिए कीमत में उतार-चढ़ाव संभव है। प्लैटिनम ज्वैलरी खरीदते समय ताजा रेट, शुद्धता और मेकिंग चार्ज जरूर जांचें। सही जानकारी के साथ खरीदी गई ज्वैलरी भविष्य में बेचते समय उचित कीमत दिला सकती है।

मिडिल ईस्ट में तनाव से एशियाई बाजारों में गिरावट

मुंबई । मिडिल ईस्ट में बढ़ते संघर्ष के बीच निवेशक जोखिम से बच रहे हैं, जिससे एशियाई शेयर बाजार लगातार दबाव में हैं। एमएससीआई एशिया पैसिफिक इंडेक्स लगभग 2 फीसदी गिर गया है और साउथ कोरिया का बाजार छुट्टियों के बाद 5 फीसदी से अधिक नीचे आ गया। अत्यधिक कमजोरी के कारण प्रोग्राम ट्रेडिंग के लिए कुछ समय के लिए सेल-ऑर्डर रोक दिए गए। निवेशक इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि संघर्ष कितने समय तक चलेगा और इसका अन्य बाजारों पर क्या असर पड़ेगा। सिंगापुर स्थित वैंटेज पॉइंट एसेट मैनेजमेंट के एक चीफ ऑफिसर का कहना है कि बाजार फिलहाल मान रहा है कि यह संघर्ष लंबा नहीं होगा, लेकिन स्थिति अभी भी अस्थिर और अनिश्चित है। निवेशक सतर्क हैं और अपनी पोर्टफोलियो रणनीतियों में जोखिम कम कर रहे हैं। ईरान ने सऊदी अरब की राजधानी रियाद में अमेरिकी एम्बेसी पर हमला किया, जिससे तनाव और बढ़ गया है। इसके साथ ही ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट को बंद करने की धमकी दी है, जो तेल और गैस के व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण नौवहन मार्ग है। यह कदम वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित कर सकता है। संघर्ष के बढ़ते असर के चलते तेल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी हुई। वर्तमान में एशियाई बाजारों में गिरावट और तेल की बढ़ती कीमतें निवेशकों के लिए चिंता का विषय हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि संघर्ष की अवधि और परिणाम की अनिश्चितता अभी भी बाजारों में अस्थिरता बनाए रखेगी।

मार्च में छुट्टियों की भरमार, 2026 में 16 दिन बंद रहेगा शेयर बाजार

नई दिल्ली ।

मार्च माह भारतीय शेयर बाजार के लिए छुट्टियों से भरा रहने वाला है। सप्ताहांत शनिवार-रविवार के अलावा भी ट्रेडिंग कई दिनों तक बंद रहेगी। नेशनल स्टाक एक्सचेंज आफ इं डिया (एनएसई)और बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) श्री राम नवमी के अवसर पर 26 मार्च गुरुवार को बंद रहेंगे। वहीं श्री महावीर जयंती के कारण 31 मार्च मंगलवार को भी बाजार में कारोबार नहीं होगा। होली पर बाजार बंद रहने से निवेशकों को हालिया गिरावट के बाद कुछ राहत महसूस हुई है। वित्तीय वर्ष 2026 में भारतीय स्टॉक मार्केट में कुल 16 ट्रेडिंग हॉलिडेज़ रहेंगी, जिनमें से दो जनवरी में हो चुकी हैं। अप्रैल और मई में दो-दो, जून में एक अवकाश रहेगा। जुलाई और अगस्त में कोई छुट्टी नहीं होगी। सितंबर और दिसंबर में एक-एक दिन बाजार बंद रहेगा, जबकि अक्टूबर और नवंबर में दो-दो अवकाश निर्धारित हैं। निवेशकों और ट्रेडर्स के लिए यह कैलेंडर महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपनी निवेश और ट्रेडिंग रणनीति पहले से तय कर सकें।

मार्च 2026 की प्रमुख छुट्टियां-

- 3 मार्च, मंगलवार को होली के कारण स्टॉक मार्केट बंद रहेगा।
- 26 मार्च, गुरुवार को श्री राम नवमी के अवसर पर बाजार बंद रहेगा।
- 31 मार्च, मंगलवार को श्री महावीर जयन्ती के चलते ट्रेडिंग नहीं होगी।

अप्रैल और मई की छुट्टियां-

- 3 अप्रैल, शुक्रवार को गुड फाइडे के कारण बाजार बंद रहेगा।
- 14 अप्रैल, मंगलवार को डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर जयंती पर स्टॉक मार्केट बंद रहेगा।
- 1 मई, शुक्रवार को महाराष्ट्र दिवस के चलते ट्रेडिंग नहीं होगी।

मुस्लिम और अन्य धर्मों की प्रमुख छुट्टियां-

- 28 मई, गुरुवार को बकरी ईद के अवसर पर बाजार बंद रहेगा।
- 26 जून, शुक्रवार को मुहर्रम के कारण ट्रेडिंग नहीं होगी।

- सितंबर से दिसंबर 2026 की छुट्टियां

- 14 सितंबर, सोमवार को गणेश चतुर्थी के चलते बाजार बंद रहेगा।
- 2 अक्टूबर, शुक्रवार को महात्मा गांधी जयंती पर ट्रेडिंग नहीं होगी।
- 20 अक्टूबर, मंगलवार को दसहरा के अवसर पर स्टॉक मार्केट बंद रहेगा।
- 10 नवंबर, मंगलवार को दिवाली-बलिप्रतिपदा के चलते ट्रेडिंग नहीं होगी।
- 24 नवंबर, मंगलवार को प्रकाश गुरुपरब श्री गुरु नानक देव के अवसर पर बाजार बंद रहेगा।
- 25 दिसंबर, शुक्रवार को क्रिसमस के चलते स्टॉक मार्केट बंद रहेगा।

इस प्रकार साल 2026 में कुल 16 छुट्टियां तय की गई हैं। निवेशकों को सलाह दी जाती है कि वे इन छुट्टियों को ध्यान में रखते हुए अपने निवेश और व्यापारिक गतिविधियों की योजना पहले से बना लें।

मर्सिडीज-बेंज इंडिया ने लॉन्च की 1.40 करोड़ की नई वी-क्लास एमपीवी

- वी-क्लास एमपीवी का उत्पादन कंपनी के पुणे स्थित चाकन संयंत्र में किया गया

मुंबई । जर्मनी की लक्जरी कार निर्माता कंपनी मर्सिडीज-बेंज इंडिया ने भारतीय बाजार में अपनी नई वी-क्लास लक्जरी एमपीवी पेश की है। इस मॉडल की कीमत 1.40 करोड़ रुपये रखी गई है। कंपनी ने इसे स्थानीय स्तर पर असेंबल किया है, जिससे भारत में स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। यह मर्सिडीज-बेंज इंडिया का 12वां स्थानीय उत्पादन मॉडल है। वी-क्लास एमपीवी का उत्पादन कंपनी के पुणे स्थित चाकन संयंत्र में किया गया है। इस संयंत्र की सालाना उत्पादन क्षमता 20,000 यूनिट है। इससे कंपनी को स्थानीय मांग के अनुसार आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी और उत्पादन लागत में भी स्थिरता आएगी। कंपनी अगले वित्त वर्ष में अपनी वाहन बिक्री में वृद्धि की उम्मीद कर रही है, लेकिन कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी के अनुसार यह वृद्धि दो अंकों में नहीं होगी। उन्होंने बताया कि मार्च तिमाही इस वित्त वर्ष की बिक्री के लिए सबसे महत्वपूर्ण होगी।

जनवरी में पहले ही कीमत

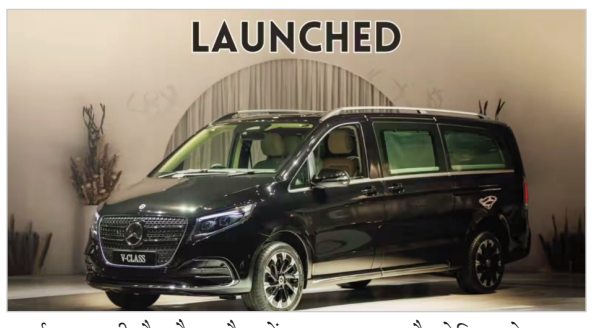

बढ़ाई जा चुकी है और अप्रैल में दूसरी बढ़ोतरी होने की संभावना है, जिससे बिक्री पर थोड़ा असर पड़ सकता है। अे धिकारी ने कहा कि कोविड-19 के बाद भारतीय लक्जरी एमपीवी खंड का बाजार बदल गया है लेकिन देश का आर्थिक आधार मजबूत है। कैलेंडर वर्ष 2025 में बिक्री स्थिर रही थी और इस वित्त वर्ष में भी बिक्री इसी तरह रहने की संभावना है।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अप्रैल-दिसंबर 2025 में 19.4 अरब डॉलर बढ़ा

पिछले साल भंडार में 10.7 अरब डॉलर की कमी दर्ज की गई थी

मुंबई ।

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 19.4 अरब डॉलर बढ़ा, जबकि इसी अवधि में पिछले साल भंडार में 10.7 अरब डॉलर की कमी दर्ज की गई थी। इस वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान मूल्यांकन लाभ का रहा। मूल्यांकन लाभ अप्रैल-दिसंबर 2025 में 50.2 अरब डॉलर रहा, जो पिछले साल के 3.1 अरब डॉलर की तुलना में काफी अधिक है। यह मुख्य रूप से सोने की ऊँची कीमत, डॉलर के मुकाबले प्रमुख मुद्राओं का अवमूल्यन और कम बांड प्रतिफल के कारण हुआ। मूल्यांकन प्रभाव को छोड़कर, भंडार में वास्तविक आर्थिक लेन-देन के आधार पर 30.8 अरब डॉलर की कमी आई, जबकि अप्रैल-दिसंबर 2024 में यह कमी 13.8 अरब डॉलर थी। चालू खाते में अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान 30.2 अरब डॉलर का घाटा दर्ज किया गया, जो पिछले साल के 36.7 अरब डॉलर के घाटे से कम है। वहीं पूंजी खाता में इस बार 0.6 अरब डॉलर का घाटा रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में 22.9 अरब डॉलर का अधिशेष था। आंकड़े बताते हैं कि वास्तविक व्यापार और पूंजी प्रवाह के आधार पर विदेशी मुद्रा भंडार में कमी हो रही है।

पश्चिम एशिया संकट से सोना-चांदी में ऐतिहासिक उछाल

- 32,000 रुपए महंगी हुई चांदी, दो महीने के उच्च स्तर पर सोना

नई दिल्ली । पश्चिम एशिया में गहराते भू-राजनीतिक तनाव के बीच सुरक्षित निवेश की मांग बढ़ने से दिल्ली सर्राफा बाजार में सोना और चांदी की कीमतों में जोरदार उछाल दर्ज किया गया। आल इं डिया सराफा एसो शियेशन के अनुसार, चांदी 32,000 रुपये यानी 11.94 फीसदी उछलकर 3,00,000 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी कर सहित) पर पहुंच गई। इससे पहले इसका भाव 2,68,000 रुपये था। वहीं 99.9 फीसदी शुद्धता वाला सोना 8,100 रुपये (4.92 फीसदी) की बढ़त के साथ 1,72,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 1,64,700 रुपये प्रति 10 ग्राम पर था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कीमती धातुओं में मजबूती देखी गई। हाजिर सोना 116.38 डॉलर (2.21 फीसदी) बढ़कर 5,394.28 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया, जबकि चांदी 1.43 फीसदी की तेजी के साथ 95.19 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करती रही। रिपोर्ट्स के मुताबिक ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, कुवैत, कतर, सऊदी अरब, जॉर्डन, इराक और सीरिया में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाते हुए जवाबी कार्रवाई शुरू की है।

पश्चिम एशिया में तनाव से वैश्विक तेल बाजार में हलचल

- ब्रेंट क्रूड वायदा 78.83 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंचा

नईदिल्ली ।

पश्चिम एशिया में बढ़ते राजनीतिक तनाव और ईरान द्वारा होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद करने की चेतावनी ने वैश्विक तेल बाजार में हलचल मचा दी है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि यह मार्ग अवरुद्ध होता है, तो वैश्विक तेल आपूर्ति पर गंभीर असर पड़ सकता है। जानकारी के अनुसार ब्रेंट क्रूड वायदा 78.83 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया, जो लगातार तीसरे कारोबारी दिन तेजी को दर्शाता है। सोमवार को कीमतें 82.37 डॉलर तक उछली थीं, जो जनवरी 2025 के बाद का उच्चतम स्तर है। स्ट्रेट आफ होमुर्ज दुनिया के सबसे अहम तेल मार्गों में से एक है। यहां से वैश्विक कच्चे तेल की लगभग 20 फीसदी आपूर्ति गुजरती है। मार्ग में किसी भी प्रकार की रुकावट वैश्विक सप्लाई चेन और तेल की कीमतों पर सीधा असर डाल सकती है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि तनाव लंबा चलता है, तो ब्रेंट क्रूड की कीमतें 100-115 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती हैं। मुख्य समुद्री मार्गों में रुकावट होने पर कीमतें 120-140 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंचने की आशंका है। भारत अपनी तेल जरूरत का बड़ा

हिस्सा आयात करता है। अंतरराष्ट्रीय कीमतों में बढ़ोतरी से आयात बिल बढ़ेगा, पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस महंगी होगी, जिससे महंगाई बढ़ सकती है और आम जनता की जेब पर दबाव पड़ेगा।

पोस्ट ऑफिस की वरिष्ठ नागरिक बचत योजना, 3 लाख लगाने पर मिलेंगे 4.23 लाख

सरकार इस स्कीम पर वर्तमान में देती है 8.2 फीसदी सालाना ब्याज

नई दिल्ली।

रिटायरमेंट के बाद अपनी मेहनत की कमाई सुरक्षित रखना और उस पर अच्छी आय अर्जित करना हर वरिष्ठ नागरिक की प्राथमिकता होती है। इसके लिए पोस्ट ऑफिस वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एससीएसएस) एक बेहतरीन विकल्प है। यह योजना खासतौर पर 60 साल और उससे अधिक उम्र के लोगों के लिए डिज़ाइन की गई है, जो बिना किसी जोखिम के नियमित आय चाहते हैं। सरकार इस स्कीम पर वर्तमान में 8.2 फीसदी सालाना ब्याज देती है। उदाहरण के लिए 3,00,000 निवेश करने पर 5 साल के बाद कुल ब्याज 1,23,000 रुपए होगा और मैच्योरिटी पर कुल राशि 4,23,000 रुपए हो जाएगी। ब्याज हर तीन महीने में दिया जाता है, जिससे यह बुजुर्गों के छोटे खर्चों के लिए पॉकेट मनी का काम करता है। एससीएसएस खाता किसी भी डाकघर में आसानी से खोला जा सकता है। न्यूनतम निवेश 1,000 रुपए और अधिकतम 30 लाख रुपए है। यह योजना 5 साल के लॉक-इन पीरियड के साथ आती है, जिससे बचत की आदत भी बनती है। अब ब्याज सीधे बैंक खाते में ईसीएस के माध्यम से भेजा जा सकता है।

ध्यान रखें कि यदि सालाना ब्याज निर्धारित सीमा से अधिक है, तो उस पर टीडीएस कट सकता है। निवेशक फॉर्म 15जी या 15एच जमा करके इसे रोक सकते हैं। साथ ही समय पर ब्याज निकालना जरूरी है क्योंकि अप्रयुक्त ब्याज पर दोबारा ब्याज नहीं मिलता।

सुजलॉन एनर्जी शेयर में जोरदार गिरावट, 86 वाला शेयर हुआ 40 रुपए का

- इंट्राडे में यह शेयर करीब 8.3 फीसदी टूटकर 40 रुपये के मनोवैज्ञानिक स्तर के नीचे

नई दिल्ली ।

रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर की प्रमुख कंपनी सुजलान इनर्जी के शेयरों में सोमवार को भारी गिरावट देखी गई। इंट्राडे में यह शेयर करीब 8.3 फीसदी टूटकर 40 रुपये के मनोवैज्ञानिक स्तर के नीचे चला गया। दिन में एक समय यह 39.13 रुपये तक गिर गया, जो मई 2024 के बाद का सबसे निचला स्तर है। कंपनी का शेयर सितंबर 2024 में 86 रुपये के ऑल टाइम हाई पर था, यानी अब तक लगभग 50 फीसदी का नुकसान हो चुका है। पिछले 9 महीनों में से 8 महीने इस स्टॉक ने लाल निशान में बंद किया। साल 2025 में भी शेयर 15 फीसदी टूटा, जो पिछले 5 साल में पहली सालाना गिरावट है। तेजी के जोश में उच्च स्तरों पर निवेश करने वाले रिटेल निवेशकों की आधी पूंजी अब तक घट चुकी है। भले ही कंपनी की ऑर्डर बुक भरी हुई दिखाई देती है, लेकिन प्रोजेक्ट्स की रफ्तार धीमी है। जमीन अधिग्रहण में देरी, राइट आफ वे विवाद और ग्रिड कनेक्टिविटी की समस्याएं कंपनी के लिए बड़ी बाधा बन गई हैं। जेएम फाइनेंशियल के अनुसार, पिछले सात तिमाहियों में 3,175 मेगावॉट उपकरण सप्लाई किए गए, लेकिन सिर्फ 778 मेगावॉट ही चालू हो पाए। यह ऑपरेशंस में गंभीर अड़चन का संकेत है। भारी गिरावट और चुनौतियों के बावजूद ब्रोकरेज हाउसेस ने सुजलॉन पर भरोसा बनाए रखा है। ब्रोकरेज हाउसेस का कहना है कि कंपनी की लंबी अवधि की क्षमता मजबूत है, इसलिए खरीदारी की सलाह दी जा रही है, हालांकि निवेशक सावधानी बरतें क्योंकि ऑपरेशनल और लॉजिस्टिक चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं।

भारत ने पश्चिम एशिया संकट के मद्देनजर व्यापार सहायता डेस्क की स्थापना की

- निर्यातकों और आयातकों को माल और वित्तीय लेनदेन की दिक्कतों से निपटने में मदद मिलेगी

मुंबई ।

पश्चिम एशिया में हालिया टकराव के बीच भारतीय सरकार ने व्यापार प्रभावितों के लिए बहु-मंत्रालयी सहायता डेस्क स्थापित किया है। इसका नेतृत्व विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) के एक वरिष्ठ अधिकारी करेंगे। डेस्क का उद्देश्य निर्यातकों और आयातकों को माल और वित्तीय लेनदेन में उत्पन्न होने वाली दिक्कतों से निपटने में मदद करना है। निर्यातकों ने बताया कि पश्चिम एशिया जाने वाला माल मुंद्रा और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट पर फंसा हुआ है, लगभग 3,000 कंटेनर प्रभावित हैं। शिपिंग कंपनियां सुरक्षा कारणों से फिलहाल नए ऑर्डर नहीं ले रही हैं। सीएसएलए के अनुसार, अमेरिका को सामान केप ऑफ गुड होप मार्ग से भेजा जाएगा, लेकिन पश्चिम एशिया के लिए शिपमेंट रोक दिया गया है। बंदरगाह अतिरिक्त जगह प्रदान करने और भीड़भाड़ कम करने के प्रयास कर रहे हैं। शनिवार को अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर हमला और अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद ईरान ने यूएई, बहरीन, कुवैत और कतर सहित खाड़ी देशों को निशाना बनाया। इससे पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ गया, जो व्यापार और माल की आवाजाही पर प्रत्यक्ष असर डाल रहा है। वाणिज्य विभाग की बैठक में कार्गो आवाजाही, अनावश्यक देरी कम करने और कागजी प्रक्रिया सरल बनाने पर चर्चा हुई।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

मध्य पूर्व संकट: 'बहुत शुक्रगुजार हूं', भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु सुरक्षित घर लौटीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के कारण फ्लाइट ऑपरेशन सस्पेंड होने के बाद तीन दिन तक दुबई में फंसी रहने के बाद सुरक्षित घर लौट आई हैं। सिंधु मंगलवार से शुरू होने वाले मशहूर ऑल इंग्लैंड ओपन के लिए बर्मिंघम जा रही थीं और रास्ते में दुबई में उनका एक लेओवर था। लेकिन दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के कारण फ्लाइट में बड़ी रुकावट के कारण दुबई एयरपोर्ट पर फंस गईं।

सिंधु ने X पर पोस्ट किया, 'बैंगलोर में घर वापस आ गई हूं और सुरक्षित हूं। पिछले कुछ दिन बहुत मुश्किल और अनिश्चित रहे हैं, लेकिन मैं अपने घर वापस आकर सच में बहुत शुक्रगुजार हूं। शानदार ग्राउंड टीमों, दुबई अथॉरिटीज, एयरपोर्ट स्टाफ, इमिग्रेशन और हर उस इंसान का दिल से शुक्रिया जिन्होंने इस मुश्किल समय में आगे आकर हमारा इतना अच्छा ख्याल रखा। हमदर्दी और प्रोफेशनलिज्म शब्दों से कहीं ज्यादा मायने रखता है। अभी के लिए आराम करने, खुद को रीसेट करने और अगले कदम तय करने का समय है।'

इससे पहले सिंधु ने सोमवार को दुबई से अपना डरावना अनुभव शेयर करते हुए कहा था कि पिछले कुछ घंटे 'बहुत टेंशन वाले' रहे हैं क्योंकि दुबई एयरपोर्ट पर जहां वह और उनकी टीम छिपी हुई थीं, उसके बहुत करीब इंटरसेप्शन और धमाकों की आवाजें आ रही थीं। सिंधु ऑल इंग्लैंड ओपन में हिस्सा नहीं ले पाईं, जहां उन्हें पहले राउंड में थाईलैंड की सुपनिडा कटेथोंग से भिड़ना था, लेकिन उनके कुछ साथी शटलर बिना किसी ट्रैवल प्रॉब्लम के बर्मिंघम पहुंचने में कामयाब रहे।

भारत और इंग्लैंड की टीमें एक दूसरे को बखूबी जानती हैं : सैम करन

मुंबई (एजेंसी)। भारत के खिलाफ टी20 विश्व कप सेमीफाइनल से पहले इंग्लैंड के सैम करन ने कहा कि दोनों टीमें एक दूसरे के खिलाफ इतना खेल चुकी हैं कि कुछ छिपाने के लिये नहीं है लेकिन उन्हें अपनी टीम से बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद है। इंग्लैंड ने 2022 में भारत को सेमीफाइनल में दस विकेट से हराने के बाद खिताब जीता था जबकि भारत ने 2024 में इंग्लैंड को 78 रन से हराने के बाद खिताब जीता था।

करन ने वानखेड़े स्टेडियम पर इंग्लैंड के अभ्यास सत्र से पहले कहा, 'इस मैदान पर हम काफी खेल चुके हैं लिहाजा कुछ छिपा नहीं है।' उन्होंने कहा, 'हमारे पास अभ्यास के लिये दो दिन का समय है जिससे हालात के अनुकूल ढलने में मदद मिलेगी। इन स्टेडियमों में हम इतना खेल चुके हैं कि अलग अलग हालात की आदत हो गई है। हम भारतीय खिलाड़ियों के साथ बहुत खेलते हैं तो कुछ भी छिपा नहीं है।'

इंग्लैंड का इस टूर्नामेंट में प्रदर्शन उतार चढाव भरा रहा है जिसने नेपाल को बमुश्किल चार रन से हराया। सुपर आठ में पाकिस्तान को दो विकेट से मात दी। करन ने कहा, 'पिछला प्रदर्शन अब मायने नहीं रखता। यह विश्व कप सेमीफाइनल है और हम इसमें अपना परफेक्ट खेल दिखाएंगे।'

वानखेड़े स्टेडियम पर भारत के समर्थकों का शोर रहेगा लेकिन करन को पता है कि उन्हें खामोश कैसे करना है। उन्होंने कहा, 'यह शानदार स्टेडियम है। मुझे यकीन है कि बृहस्पतिवार की रात यह स्टेडियम खामोश रहेगा। भारतीय टीम शानदार है लेकिन हमारे अधिकांश खिलाड़ियों ने उसके खिलाफ और आईपीएल में खेला है। हम किसी चीज से भयभीत नहीं हैं और दोनों टीमें सेमीफाइनल की चुनौती को लेकर रोमांचित होंगी।'

आईसीसी एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में मंधाना शीर्ष पर पहुंची

-गेंदबाजी रैंकिंग में अलाना किंग नंबर एक पहुंची

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना नंबर एक स्थान पर पहुंच गयी हैं। मंदाना को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज में अच्छे प्रदर्शन का लाभ मिला है। वहीं दक्षिण अफ्रीका की लॉरा वोल्वार्ड्ट दूसरे नंबर पर खिसक गयी हैं। मंधाना ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज़ में 58 और 31 रन रन बनाये थे जिससे उनके रेटिंग अंक 790 हो गये हैं। । इसके साथ वह वोल्वार्ड्ट के 782 अंकों से आगे निकल गयी हैं। बेथ मूनी 745 अंकों के साथ ही तीसरे नंबर पर हैं।

वहीं ऑस्ट्रेलियाई टीम की कप्तान एलीसा हीली चौथे नंबर पर बनी हुई हैं। हीली ने अपने करियर के अंतिम एकदिवसीय में शतक लगाया था। हीली के 744 रेटिंग पॉइंट्स हैं जबकि बेथ मूनी के 749 और एसलीगेह गार्डनर के 724 अंक हैं। वहीं भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर चार स्थान ऊपर आकर शीर्ष दस में पहुंच गयी हैं। वह नौवें स्थान पर हैं। भारत की ही मिमा रोड्रिग्स 12वें स्थान पर बनी हुई हैं।

वहीं गेंदबाजी रैंकिंग में भी काफी बदलाव आया है। ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर अलाना किंग 775 रेटिंग अंक के साथ नंबर-1 बन गई हैं। उन्होंने लगभग चार साल तक नंबर एक पर रहीं। सोफी ऐसलेस्टोन को पीछे छोड़ दिया। अलाना ने सीरीज़ में 16.71 की औसत से सात विकेट लिए, जिसमें तीसरे एकदिवसीय में चार विकेट शामिल हैं। इसके अलावा

ऑलराउंडरों की रैंकिंग में एशलेगाह गार्डनर 516 अंकों के साथ नंबर-1 पर हैं। उन्होंने वेस्टइंडीज की हेली मैथयूज (418) पर लगभग 100 अंकों की बढ़त बनायी है। भारत की दीप्ती शर्मा गेंदबाजी रैंकिंग में 10वें और ऑलराउंडर सूची में पांचवें स्थान पर मौजूद हैं।

टी20 विश्वकप : आज पहले सेमीफाइनल में होगा दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड का मुकाबला

कोलकाता (एजेंसी)। आईसीसी टी20 विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट 2026 के पहले सेमीफाइनल में बुधवार को पिछले बार की उपविजेता दक्षिण अफ्रीका का मुकाबला न्यूजीलैंड से होगा। इस मुकाबले को जीतकर दोनो ही टीमें फाइनल में पहुंचने के इरादे से उतरेंगी।

दक्षिण अफ्रीका ने ग्रुप स्तर पर शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने सभी मैच जीतकर यहां तक का सफर तय किया है। उसके बल्लेबाज और गेंदबाज अच्छे फार्म में हैं। जिससे उसी जीत की दावेदारी मजबूत है। वहीं दूसरी ओर कीवी टीम भी कम नहीं है। वह भी इस बार खिताबी मुकाबले में पहुंचने पूरी ताकत लगा देगी। न्यूजीलैंड की टीम ग्रुप स्तर पर अफ्रीकी टीम के हाथों मिली हार से उबरकर इस मैच में अपनी ओर से जीत का पूरा प्रयास करेगी। वहीं न्यूजीलैंड की टीम मुश्किल से सेमीफाइनल तक पहुंची है। इससे उसे अपनी बल्लेबाजी और गेंदबाजी में सुधार करना होगा।

अफ्रीकी टीम ने सुपर 8 स्टेज में शानदार प्रदर्शन के बाद यहां पहुंची हैं, इसमें उन्होंने पहले पिछले बार की विजेत भारत को 76 रन से हराया था। इसके बाद वेस्टइंडीज को 9 विकेट से हराने के बाद जिम्बाब्वे के खिलाफ करीबी जीत के साथ सुपर 8 चरण का अंत किया।

दूसरी ओर न्यूजीलैंड का सुपर 8 अभियन सामानय रहा जिसमें पाकिस्तान के खिलाफ उनका पहला मैच बारिश की वजह से रद्द हो गया था। टीम ने श्रीलंका के खिलाफ अपने अगले मैच में 61 रन से जीत दर्ज की। वहीं उसे इंग्लैंड के खिलाफ करीबी हार का सामना करना पड़ा पर अच्छे नेट रन रेट के साथ वह अंतिम चार में आ गयी।

विश्वकप में कभी नहीं जीत पायी कीवी टीम

वहीं अगर टी20 विश्व कप के आंकड़ों को देखें तो दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड का 5 बार आमना-सामना हुआ है। विश्व कप में हर बार आंकड़ों पर नजर डालें तो दक्षिण अफ्रीका का पलड़ा भारी है। अंतर्राष्ट्रीय टी20 क्रिकेट में अब तक दोनों टीमों का 19 बार मुकाबला हुआ है, जिनमें 12 बार दक्षिण अफ्रीका जीती है जबकि 7 बार ही कीवी टीम जीत हासिल कर पाई है।

दक्षिण अफ्रीका जीता है।

इस बार दक्षिण अफ्रीकी टीम अब तक पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही है। पहले उसने ग्रुप स्टेज में चारों मैच जीतकर टॉप किया, फिर सुपर-8 में भी दबदबा बनाए रखा और अपने तीनों मैच जीते। इससे साफ है कि उसे रोकना कीवियों के लिए काफी कठिन होगा।.

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

दक्षिण अफ्रीका- एडेन मार्करम (कप्तान), क्विंटन डी कॉक, डेवाल्ड ब्रेविस, डेविड मिलर, मार्को यान्सन, केशव महाराज, कगिसो रबाडा, क्रेना मफाका, लुंगी एनगिडी, जेसन स्मिथ, जॉर्ज लिंडे, कॉर्बिन बॉश, एनरिक नॉर्खिया, ट्रिस्टन स्टब्स और रायन रिकल्टन।

न्यूजीलैंड- मिचेल सेंटनर (कप्तान), फिन एलन, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, लॉकी फॉर्ग्यूसन, मैट हेनरी, डेरिल मिचेल, जिमी निशम, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रविंद्र, टिम सईफर्ट, ईश सोढ़ी, काइल जेमिसन, कॉल मैककॉन्ची

बावुमा को दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिताब जीतने की उम्मीदें

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटर टेम्बा बावुमा इस बार टी20 विश्वकप में अपनी टीम के प्रदर्शन से बेहद खुश हैं। वावुमा को उम्मीद है कि इस बार उनकी टीम खिताब अवश्य जीतेगी। दक्षिण अफ्रीका को अब बुधवार को सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से खेलना है। टीम पिछले बार उपविजेता रही थी। तब उसे फाइनल में भारतीय टीम के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। बावुमा ने कहा कि उनकी टीम ने अपनी सभी कमजोरियों को दूर कर लिया है और वह विश्वकप जीतने की प्रबल दावेदार है। साथ ही कहा कि टीम के पास हर क्षेत्र में मैच का रुख बदलने वाले खिलाड़ी हैं। बावुमा ने कहा है कि अब तक बल्लेबाज एडेन मारक्रम, डेविड मिलर और तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। कप्तान ने कहा, मैं इस विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका के प्रदर्शन से काफी उत्साहित हूं। टीम खेल के हर पहलू में काफी मजबूत है। बल्लेबाजी और गेंदबाजी में कोई कमी नहीं है और खिलाड़ी खिताब जीतने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

छक्के लगाने के मामले में शीर्ष पर हैं अभिषेक

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के आक्रामक सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा का प्रदर्शन अब तक टी20 विश्वकप में अच्छा नहीं रहा है। इसके बाद भी अभिषेक सबसे कम 331 गेंदों में 50 छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में शीर्ष पर हैं। वहीं दूसरे नंबर पर एविन लुइस और तीसरे पर डेवाल्ड ब्रेविस हैं। इन दोनो ने ही 366 और 368 गेंदों पर अपने 50 छक्के पूरे किये हैं। वहीं चौथे नंबर पर आंद्रे रसेल और पांचवे पर हजरतुल्लाह जजई है। इन दोनो ने ही 409 और 492 गेंदों में अपने 50 छक्के पूरे किये हैं।

छक्के लगाने के मामले में सबसे तेजी से आगे आने वालों में उभरते हुए बल्लेबाज ब्रेविस हैं। उन्होंने आंद्रे रसेल जैसे दिग्गज को पीछे छोड़ा है। जिम्बाब्वे के खिलाफ हाल सुपर 8 के मैच में ब्रेविस ने 18 गेंदों में ही 2 चौके और 4 छक्के लगाकर 42 रन बनाए। उनका स्ट्राइक रेट 233.33 का था। इसी दौरान ही इस बल्लेबाज ने टी20 क्रिकेट में अपने 50 छक्के भी पूरे किए।

सूर्यकुमार बने टी20 मे सबसे सफल भारतीय कप्तान

-50 मैचों में जीत प्रतिशत के मामले में विश्व में दूसरे नंबर पर

नई दिल्ली। भारतीय टी20 क्रिकेट टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव अब इस प्रारुप में भारतीय टीम के नंबर एक कप्तान बन गये हैं। सूर्यकुमार ने सबसे सफल कप्तान के तौर पर रोहित शर्मा समेत विराट कोहली और महेन्द्र सिंह धोनी को भी पीछे छोड़ दिया है। सूर्यकुमार का अब टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में जीत का औसत कप्तान के तौर पर सबसे अच्छा हो गया है। अगर देखा जाये तो 50 मैचों में भारतीय टीम की कप्तानी करने वाले किसी भी कप्तान का जीत औसत इतना नहीं है, जितना की सूर्यकुमार यादव का है। वह सबसे अधिक जीत प्रतिशत के मामले में विश्व के दूसरे कप्तान हैं।

वेस्टइंडीज के खिलाफ सुपर 8 के अंतिम मैच में उतरते ही सूर्यकुमार 50 मैचों में कप्तानी करने वाले भारतीय कप्तान बन गये। इस मैच में भारतीय टीम को जीत मिली और ये उनकी कप्तानी में टीम की 40वीं जीत थी। इसी के साथ उन्होंने रोहित और विराट का रिकॉर्ड तोड़ दिया। सूर्यकुमार से पहले भारत के लिए सबसे अधिक जीत प्रतिशत का रिकॉर्ड रोहित के नाम 79.83 का था। सूर्यकुमार का जीत प्रतिशत टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 81.25 है और वह दूसरे नंबर पर हैं। वहीं अफगानिस्तान के असगर अफगान हैं ने 50 से अधिक मैचों में कप्तानी करते की है और उनका जीत प्रतिशत 81.73 का है। वहीं तीसरे नंबर पर भी भारत के ही विराट कोहली हैं, उनकी कप्तानी में जीत प्रतिशत 64.58 का रहा है। वहीं धोनी की कप्तानी में ये 59.28 प्रतिशत रहा है।

इजरायल-ईरान युद्ध का असर फुटबॉल विश्व कप पर, ईरान की जगह इस टीम को मिल सकता है मौका

जेनेवा (एजेंसी)। मध्य पूर्व में बढ़ते संघर्ष के बीच आगामी फुटबॉल विश्व कप में ईरान की भागीदारी पर संशय गहरा गया है। अमेरिका की पहल पर क्षेत्र में जारी तनाव को देखते हुए तीन महीने बाद होने वाली इस बड़ी प्रतियोगिता में ईरान का खेलना संदिग्ध माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उसकी जगह इराक या संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को मौका मिल सकता है।

अमेरिका में होने हैं ईरान के ग्रुप मैच

ईरान को ग्रुप चरण के अपने तीनों मैच अमेरिका में खेलने हैं। उसे ग्रुप जी में रखा गया है, जहां 15 जून को इंग्लेवुड (कैलिफोर्निया) में न्यूजीलैंड और 21 जून को बेल्जियम से मुकाबला करना है। इसके बाद 26 जून को सिएटल में मिस्र के खिलाफ अंतिम ग्रुप मैच खेलना निर्धारित है।

बढ़ते संघर्ष से स्थिति जटिल

अमेरिका और इजरायल के हमलों के बाद ईरान द्वारा जवाबी कार्रवाई किए जाने से क्षेत्रीय तनाव बढ़ गया है। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने कतर और सऊदी अरब जैसे अमेरिकी सहयोगी देशों पर मिसाइलें दागीं। इसी बीच, फीफा ने सऊदी अरब को 2034 विश्व कप की मेजबानी सौंपी है।

एशियाई फुटबॉल महासंघ के उपाध्यक्ष और ईरान के शीर्ष फुटबॉल अधिकारी Mehdi Taj ने कहा, 'इस हमले के बाद विश्व कप में भागीदारी को लेकर हम आशान्वित नजरिए से नहीं देख सकते।'

फीफा की चुप्पी, भविष्य अनिश्चित

फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि ईरान 11 जून से शुरू होने वाले विश्व कप के लिए टीम भेजेगा या नहीं, अथवा अमेरिका सरकार उसके प्रवेश पर रोक लगाएगी। फीफा ने इस मामले पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है। ईरान एशियाई फुटबॉल की मजबूत टीम मानी जाती है और उसने पिछले आठ में से छह विश्व कप के लिए क्वालीफाई किया है।

आर्थिक नुकसान और संभावित विकल्प

यदि ईरान विश्व कप से हटता है तो उसके फुटबॉल महासंघ को कम से कम 10.5 मिलियन डॉलर का नुकसान होगा और उस पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में एशिया से इराक या यूएई संभावित विकल्प हो सकते हैं।

इराक एशियाई क्वालीफाइंग में नौवें स्थान पर रहा और उसने प्लेऑफ में यूएई को हराया। अब उसे 31 मार्च को बोलीविया या सूरीनाम के खिलाफ मुकाबला खेलना है। जीत की स्थिति में वह सीधे विश्व कप में पहुंच सकता है, जबकि हार की स्थिति में भी ईरान के हटने पर उसे मौका मिल सकता है।

अब सीओई में कोच के तौर पर तेज गेंदबाजों को निखारेंगे जहीर

मुम्बई। पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान अब कोच की भूमिका में नजर आयेंगे। जहीर को बेंगलुरु स्थित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) में तेज गेंदबाजों को कोचिंग देने की जिम्मेदारी दी गयी है। जहीर को ऑस्ट्रेलिया के ट्रॉय कूली की जगह पर कोच बनाया गया है। कूल का चार साल का कार्यकाल समाप्त हो गय है। वह अब इंग्लैंड टीम के तेज गेंदबाजी विशेषज्ञ कोच की जिम्मेदारी संभालेंगे। जहीर कोचिंग भूमिका निभाने को लेकर काफी उत्साहित हैं। वह पहले आईपीएल में लखनऊ सुपरजायंट के कोच रहे हैं। ऐसे में उन्हें कोचिंग का अच्छा अनुभव है। माना जा रहा है कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2025-27 चक्र को देखते हुए जहीर को गेंदबाजों का निखारने की जिम्मेदारी दी गयी है। पिछले साल इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में जसप्रीत बुमराह सभी मैच नहीं खेल सके थे, जिससे टीम का संतुलन कमजोर पड़ा था। तब मोहम्मद सिराज ने गेंदबाजी की कमान संभाली थी पर बोर्ड चाहता है कि उसके पास बेहतर तेज गेंदबाजों का एक पूल होना चाहिये जो किसी भी प्रकार के कठिन हालातों पर नियंत्रण कर सके। नवंबर 2026 में न्यूजीलैंड दौरे को ध्यान में रखते हुए भारतीय टीम अपनी तेज गेंदबाजी आक्रमण को बेहतर बनाना चाहती है। इसके अलावा चयन समिति की नजरें घरेलू क्रिकेट के उभरते सितारों पर भी है। रणजी ट्रॉफी 2025-26 में जम्मू-कश्मीर के लिए शानदार प्रदर्शन करने वाले आकिब नबी पर भी उसकी नजरें हैं। अकीब आईपीएल 2026 में दिल्ली कैपिटल्स से खेलेंगे।

टी20 विश्वकप के शीर्ष पांच बल्लेबाजों और गेंदबाजों में केवल एक-एक भारतीय

नई दिल्ली। आईसीसी टी20 विश्वकप क्रिकेट में भारत सहित चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंच गयी हैं। ऐसे में अब तक लीग स्तर से लेकर सुपर-8 तक के मुकाबलों को देखें तो अब तक पांच बल्लेबाजों और पांच गेंदबाजों का इस टूर्नामेंट में दबादबा रहा है। इन शीर्ष पांच बल्लेबाजों में एक ही भारतीय सूर्यकुमार यादव हैं। वहीं पांच गेंदबाजों में भारत के एकमत्र वरुण चक्रवर्ती भी शामिल है। शीर्ष 5 बल्लेबाजों की बात करें तो पाकिस्तान के साहिबजादा फरहान नंबर एक पर हैं। उन्होंने 6 मैचों में 383 रन बनाए हैं हालांकि पाकी टीम हार के साथ ही टूर्नामेंट से बाहर हो गयी है। वहीं दूसरे नंबर पर ब्रायन बेनेट हैं, जिन्होंने जिम्बाब्वे के लिए 292 रन बनाए हैं और उनकी टीम भी इस टूर्नामेंट से हार हो गयी है। तीसरे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के एडेन मारक्रम हैं, जो 268 रन बना चुके हैं। उनकी टीम सेमीफाइनल में है और ऐसे में उनके पास और आगे जाने का अवसर है। चौथे नंबर पर वेस्टइंडीज के शिमरोन हेटमायर हैं, जिन्होंने 248 रन बनाए हैं पर उनकी भी टीम बाहर हो चुकी है। पांचवें नंबर पर 231 रनों के साथ सूर्यकुमार यादव हैं। सूर्या शीर्ष 5 में एकमात्र भारतीय हैं और टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने से उनके पास ओर रन बनाने का अवसर है।

वहीं दूसरी ओर गेंदबाजी की बात करें तो- सबसे अधिक विकेट लेने की सूची में अमेरिक के शैडली वैन शाल्कविक हैं उनकी टीम सुपर-8 तक भी नहीं पहुंची पर उनके नाम चार मैचों में सबसे अधिक 13 विकेट हैं। जिम्बाब्वे के ब्लेसिंग मुजारबानी के नाम 6 मैचों में 13 विकेट हैं और वह दूसरे नंबर पर हैं उनकी टीम भी टूर्नामेंट से बाहर हो गयी है। तीसरे नंबर पर दक्षिण अफ्रीका के लुंगी एनगिडी हैं, उनके नाम 12 विकेट हैं और सेमीफाइनल में भी टीम पहुंची है। वही भारतीय टीम के स्पिनर वरुण चक्रवर्ती भी 12 विकेट लेकर इस सूची में शामिल हैं। भारतीय टीम भी सेमीफाइनल में है उनके विकेटों की संख्या बढ़ना तय है। पांचवें स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के कोर्बिन बोस हैं, उनके नाम 11 विकेट हैं और उनकी टीम भी सेमीफाइनल में पहुंची है।।

पाक के पूर्व क्रिकेटर आमिर ने भारतीय टीम के प्रदर्शन पर उठाये सवाल

लाहौर । टी20 विश्वकप से बाहर हुई पाकिस्तान टीम के पूर्व खिलाड़ी भारत के सेमीफाइनल में पहुंचने से चिढ़े हुए हैं। इसका अंदाजा इसी से होता है कि पाक के पूर्व खिलाड़ी मोहम्मद आमिर ने भारतीय टीम के समीफाइनल में पहुंचने के बाद भी उसके प्रदर्शन पर सवाल उठाये हैं पर बल्लेबाज संजू सैमसन की प्रशंसा की है। आमिर ने

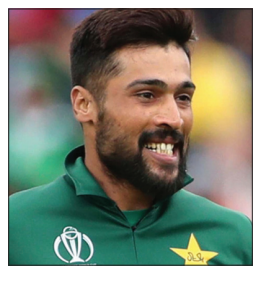

विश्वकप शुरु होने से पहले कहा था भारतीय टीम सेमीफाइन में नहीं पहुंच पायेगी। उन्होंने तब कहा था कि भारतीय टीम के प्रदर्शन में निरंतरता नहीं है और उसके कई कमजोर पक्ष है जिससे वह अंतिम चार में नहीं पहुंच पायेगी पर पाक टीम सेमीफाइनल में पहुंचेगी लेकिन आमिर की ये भविष्यवाणी गलत साबित हो गयी। इसके बाद से ही सोशल मीडिया पर उनका मजाक उड़ रहा है। वहीं आमिर ने सैमसन की नाबाद 97 रन की पारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार की पारी खेलना आसान नहीं होता। आमिर के अनुसार सैमसन की कठिन हालातों में खेली पारी से भारतीय टीम जीती पर इसके बाद भी सेमीफाइनल उसके लिए आसान नहीं रहेगा। इसका कारण है कि एक शानदार पारी टीम की कमजोरियों को समाप्त नहीं कर सकती। आमिर के अनुसार भारतीय टीम की फील्डिंग अच्छी नहीं है उसने मैच के दौरान कई कैच छोड़े हैं। इसके अलावा तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के अलावा अन्य गेंदबाजों ने काफी अधिक रन दिये हैं। टीम एक ही गेंदबाज पर टिकी हुई है।

सेमीफाइल में जैक्स से भारतीय टीम को रहना होगा सावधान : गावस्कर

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि भारतीय टीम को गुरुवार को इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले दूसरे सेमीफाइनल में मेहमान टीम के ऑलराउंडर विल जैक्स से सतर्क रहना होगा। गावस्कर के अनुसार जैक्स अभी अच्छे फार्म में हैं, ऐसे में उनपर अंकुश लगाये रखना जरुरी होगा। गावस्कर ने कहा कि अगर पिच से थोड़ी भी स्पिन मिली तो जैक्स को खेलना भारतीय टीम के लिए काफी मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि संजू सैमसन, सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पंड्या को इस मैच में पूरी जिम्मेदारी से बल्लेबाजी करनी होगी। गावस्कर के अनुसार सैमसन, सूर्यकुमार और पंड्या के प्रदर्शन से ही इस मैच का परिणाम तय होगा। उन्होंने कहा कि जैक्स सातवें नंबर पर उतरकर मैच की दिशा बदल सकते हैं, इसलिए उनपर दबाव बनाये रखना जरुरी रहेगा। वह वही भूमिका निभाते हैं जो भारत के लिए शिवम दुबे निभाते हैं।

जैक्स ने अब तक इस टूर्नामेंट में चार बार 'प्लेयर ऑफ द मैच' का अवॉर्ड जीता है। उन्होंने कई अवसरों पर टीम को कठिन हालातों से उबारा है। न्यूजीलैंड के खिलाफ जैक्स ने 18 गेंदों में नाबाद 32 रन बनाकर अपनी टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया था। वहीं श्रीलंका के खिलाफ कम स्कोर वाले मुकाबले में भी उसने तेजी से रन बनाने के बाद 3 अहम विकेट श्रीलंकाई टीम को लक्ष्य तक पहुंचने से रोक दिया। पावरप्ले में वह ऑफ स्पिन गेंदबाजी से भारतीय बल्लेबाजों को विकेट गंवाने के लिए ललचा सकते हैं। जैक्स आईपीएल में मुंबई इंडियंस की ओर से खेलते आये हैं। इसलिए वह वानखेड़े की मैदान को भली भांति जानते हैं। वह भारतीय टीम के खिलाफ पहली बार किसी टी20 मैच में खेल रहे हैं। ऐसे में वह और भी खतरनाक साबित हो सकते हैं क्योंकि अधिकतर बल्लेबाज पहली बार उनका सामना करेंगे। गावस्कर ने कहा कि दोनो ही टीमें आफी अच्छी हैं, ऐसे में ये मुकाबला रोमांचक होना तय है। वहीं वानखेड़े स्टेडियम में भारतीय टीम का सेमीफाइनल रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। उसे । 1987 एकदिवसीय विश्वप सेमीफाइनल में इंग्लैंड से हार का सामना करना पड़ा था जबकि साल 2016 टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में वह वेस्टइंडीज से हारी पर 2011 एकदिवसीय विश्वकप फाइनल में उसने इसी मैदान पर श्रीलंका को हराकर खिताब जीता था। गावस्कर का मानना है कि पुराने रिकॉर्ड से आज के हालातों में फर्क नहीं पड़ता और भारतीय टीम फाइनल तक जाने में सक्षम हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

हर परिस्थिति में खुद को रखें कॉन्फिडेंट

नौकरी के दौरान अक्सर एक जैसा काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। नौकरी के दौरान अक्सर एक जैसा काम करते हुए हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं, जिसमें जरा-सा बदलाव भी हमें असहज कर देता है। लगातार सुविधापूर्ण स्थिति में आत्ममुग्ध रहना एक तरह से 'असुविधा'' को ही दावत देना है। अगर आप भी कंफर्ट जोन में खुद को 'कंफर्टेबल' मानकर चल रहे हैं, तो वक्त रहते संभल जाएं और ऐसा करके ही आप खुद को हर परिस्थिति में कॉन्फिडेंट रख सकेंगे।

सदाशिव पढ़ाई में अच्छे हैं। दिखने में समझदार। नौकरी जल्द शुरू कर दी थी। कुछ ही साल में अपनी पहचान भी बना ली और एक वरिष्ठ अधिकारी के लिए अलग से काम करके उनका विश्वास भी हासिल कर लिया। इसका उन्हें फायदा भी मिलता रहा। पद और प्रतिष्ठा तो मिली ही, कई बार विदेश जाने का अवसर भी मिला। मगर कई साल ऐसे ही बीतने के कारण सदाशिव आत्ममुग्धता के शिकार होते चले गए। प्रभावशाली अधिकारी का संरक्षण मिला होने के कारण वे खुद को बेहद सुरक्षित महसूस करने लगे। इस बीच उन्हें कई प्रोजेक्ट मिले, पर भरपूर अवसर मिलने के बावजूद किसी में खास प्रभाव छोड़ न पाने के कारण अंतत: वे अपने मूल विभाग में ही बने रहे। यहीं उनसे चूक होती चली गई। अपने मूल विभाग के बॉस से उनकी ट्यूनिंग बनने और प्रगाढ़ होने के बजाय बिगड़ती चली गई लेकिन आत्ममुग्धता और उच्चाधिकारी की शह के कारण उन्होंने इसकी ज्यादा परवाह नहीं की। विभागीय बॉस के उपेक्षापूर्ण नजरिये से ठेस लगने के बावजूद उनका स्वाभिमान नहीं जागा और वे निश्चिंतता के साथ टाइम पास करते रहे। इतना ही नहीं, सोशल साइट्स पर भी वे खूब दिखते और अपनी बेतुकी टिप्पणियों पर खुद ही खुश हो लेते। कुछ समय बाद स्थितियां करवट लेने लगीं। प्रभावशाली अधिकारी का प्रभाव जाता रहा और एक समय ऐसा भी आया, जब उनकी जगह कंपनी में कोई और आ गया। अब सदाशिव को सचेत हो जाना चाहिए था, पर ऐसा हुआ नहीं। उनका रवैया जस का तस बना रहा। वे चाहते, तो अपने विश्वासी अधिकारी के रहते किसी और विभाग या केंद्र या प्रोजेक्ट में अच्छे पद पर शिफ्ट हो सकते थे लेकिन सुविधाजीवी और एकरस जीवन के आदी हो चुके सदाशिव ने ऐसी कोई पहल नहीं की। एक दिन जब उन्हें कुछ गलतियां बताते हुए संस्थान से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया, तब उन्हें एहसास हुआ लेकिन तब उनके पास संभलने और सुधरने का मौका नहीं था।

भंवर है कंफर्ट जोन

सदाशिव की सच्ची कहानी महज एक उदाहरण है। आपको अपने संस्थान या दूसरी संस्थाओं, विभागों में ऐसे कई लोग मिल जाएंगे, जो कंफर्ट जोन में समय बिताते हुए खुश दिखेंगे। कई लोग यह भी कहते मिल जाएंगे कि अरे भाई, नौकरी तो सुरक्षित है ही, फिर काम की टेंशन में क्यों परेशान रहें! दरअसल, ऐसे लोग यह नहीं सोचते कि इस प्रकार का रवैया रखकर वे खुद के नुकसान की ही नींव रख रहे हैं। स्थितियां हमेशा एक-सी नहीं रहतीं। जो लोग काम से जी चुराते हैं, नया सीखने-जानने में दिलचस्पी नहीं रखते, कभी पहल करके कोई काम नहीं करते, कोई काम कहने पर समाधान के बजाय तमाम तरह की समस्याएं ही गिनाने बैठ जाते हैं, टीम मेंबर्स से भी जिन्हें ढेरों शिकायतें होती हैं, सही मायने में उनका करियर हमेशा दांव पर लगा होता है। ऐसे लोगों को जब कभी कोई काम सौंपा जाता है, तो वे उसमें इतना विलंब कर देते हैं या फिर उसे इतना उलझा देते हैं कि बॉस को आगे उन्हें काम न देने के बारे में सोचना पड़ जाता है। ऐसे लोग अपनी इस कथित रणनीति पर भले ही खुश होते हों पर जरा सोचें, क्या वह बॉस कभी उनकी प्रशंसा-अनुशंसा करेगा और जब कभी डिमोशन कर दिया गया या इंक्रिमेंट रोक लिया गया या फिर छंटनी की स्थिति में उनका नाम ही आगे बढ़ा दिया गया, तो फिर क्या उन्हें संस्थान और बॉस की आलोचना का अधिकार होना चाहिए

उपयोगिता करें साबित

आप निजी कंपनी में काम कर रहे हों या फिर सरकारी सेवा में हों, छोटे पद पर हों या बड़े पद पर, अगर आप अपने पद की जरूरतों के अनुसार खुद की उपयोगिता साबित करने का प्रयास नहीं करते, तो एक-न-एक दिन आपको जरूर नुकसान हो सकता है। अगर आप समय रहते नहीं चेतते, तो फिर आप किसी को दोष भी नहीं दे सकते। आपको कोई भी जिम्मेदारी दी जाती है, उसे उत्साह के साथ पूरा करने का प्रयास करें। अगर आपको लगता है कि उसमें बॉस से और समझने की या किसी सहयोगी की मदद लेने की जरूरत है, तो विनम्रता के साथ सहयोग लें। आपके प्रयास की गंभीरता स्पष्ट नजर आनी चाहिए। अगर आप छोटे-से-छोटे काम को भी सतर्कता के साथ बहुत अच्छी तरह पूरा करते हैं, तो निश्चित रूप से इससे आपकी छवि बेहतर होगी।

हर दिन हो नया

अगर आप एकरस जीवन से बचना और खुश रहना चाहते हैं, तो अपने काम को एंजॉय करना होगा। निष्ठा ईमानदारी से काम करेंगे, तो ज्यादा कुछ मिले-न मिले, भरपूर सुकून जरूर मिलेगा। यह आपका सबसे बड़ा रिवॉर्ड होगा। इसके अलावा गलतियों से सबक लेने, कमियों को दूर करने और हमेशा कुछ नया सीखने की ललक रखेंगे, तो आपके आत्मविश्वास का स्तर ऊंचा रहेगा और आप मुश्किल से मुश्किल काम को भी उत्साह और हौसले से कर सकेंगे। इस राह पर चलकर तरक्की की सीढ़ियां भी चढ़ते जाएंगे।

ग्रेजुएशन के बाद अमेरिका में जॉब

हाल ही में ग्रेजुएशन करने वालों के लिए अमेरिका में काम करने के लिए दो ऑप्शन हैं : ऑप्शनल प्रेक्टिकल ट्रेनिंग (ओपीटी) तथा एच1बी वीसा। ओपीटी ऐसे ताजा ग्रेजुएट्स के लिए एक कार्यक्रम है, जो अपनी पढ़ाई की फील्ड में कार्य अनुभव पाना चाहते हैं। इसके लिए दो शर्तें पूरी करना जरूरी है : पहली यह कि आपकी ओपीटी जॉब का सीधा संबंध आपकी डिग्री से होना चाहिए। मसलन, यदि आपने इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के रूप में डिग्री ली है, तो आप शेफ के रूप में नौकरी नहीं कर सकते। दूसरी शर्त यह है कि आपने जहां से डिग्री प्राप्त की है, वहां का कोई अधिकारी ओपीटी प्रोग्राम के लिए आपका नाम प्रस्तावित करे। इसलिए यह जरूरी है कि आप जहां से पढ़ाई कर रहे हैं, उस संस्थान के संपर्क में रहें और उससे अच्छे संबंध रखें। आम तौर पर ओपीटी 1 साल के लिए ही होता है। मगर यदि आपने साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग या गणित में डिग्री ली है, तो आप ओपीटी को अतिरिक्त 17 महीनों के लिए बढ़वा सकते हैं। एच1बी वीसा ऐसे लोगों के लिए है, जो किसी स्पेशिएलिटी ऑक्युपेशन में काम करते हैं। यह एक पिटिशन-बेस्ड वीसा है, यानी आपकी ओर से आपकी कंपनी इसके लिए यूएस सिटिजनशिप एंड इमिग्रेशन सर्विसेज (यूएससीआईएस) के समक्ष आवेदन करेगी। एच1बी वीसा प्राप्त करने के लिए आपको किसी यूएस एम्बेसी या कॉन्सुलेट में इंटरव्यू के लिए आना पड़ेगा। एच1बी वीसा पर आप अमेरिका में 3 साल तक काम कर सकते हैं। इसकी अवधि बढ़वाने के विकल्प भी हैं मगर कुल मिलाकर आप एच1बी वीसा पर अमेरिका में अधिकतम 6 वर्ष तक ही काम कर सकते हैं।

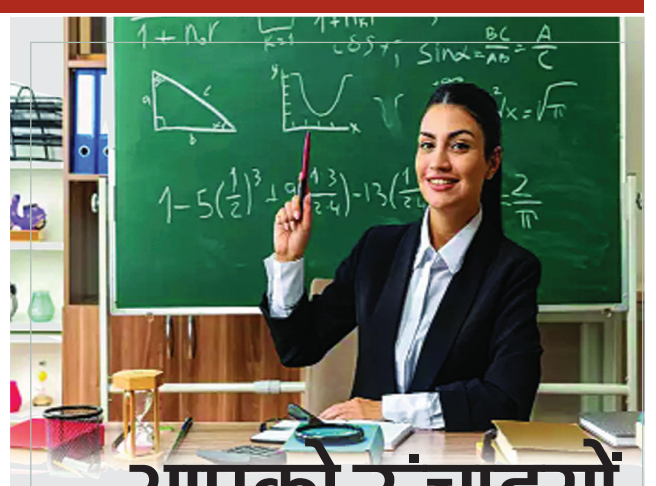

आपको ऊंचाइयों पर ले जाएंगे ये करियर ऑप्शन

आज हम आपको बताने जा रहे हैं गणित में 8 ऐसे करियर ऑप्शन जो आपको ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।

छात्रों के बीच गणित विषय को कठिन विषय समझा जाता है, इसका नाम सुनते ही बहुत से छात्र दूर भागते हैं। परंतु यदि प्रारंभ से ही गणित विषय को सही प्रकार से हैंडिल किया जाए तो आपकी गणित पर अच्छी पकड़ हो सकती है। गणित विषय का अर्थ केवल जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग देना नहीं है। इस विषय में उच्च शिक्षा लेकर करियर की अपार संभावनाएं हैं। गणित विषय मनुष्य की ज्ञान की एक उपयोगी तथा आकर्षक शाखा है। इसमें अध्ययन के कई क्षेत्रों को शामिल किया गया है। भारत में प्राचीन काल से ही गणित की एक सुदृढ़ परंपरा रही है। प्राचीन काल के कई गणितज्ञों आर्यभट्ट, वराह मिहिर, महावीराचार्य, ब्रह्मगुप्त, श्रीधराचार्य इत्यादि ने तथा आधुनिक काल में डॉ गणेश प्रसाद, प्रोफेसर बीएन प्रसाद, श्रीनिवास रामानुजन इत्यादि ने गणित की सुदृढ़ नींव रखी है।

इकोनॉमिस्ट

एक इकोनॉमिस्ट आर्थिक रुझानों का अन्वेषण करके मूल्यांकन करता है। भविष्य को लेकर पूर्वानुमान जारी करता है। वह विभिन्न विषयों जैसे महंगाई, कर, ब्याज दर, रोजगार का स्तर आदि का डेटा संग्रह करता है। उस पर अनुसंधान करता है और विश्लेषण करता है। अर्थशास्त्री बनने के लिए गणित विषय को जरूरी माना जाता है। एक अर्थशास्त्री बनने के लिए अर्थशास्त्र में बैचलर डिग्री होना और गणित पर अच्छी पकड़ होना आवश्यक है। इसके बाद अर्थशास्त्र, इकोमेट्रिक्स, ऐप्लाइड इकोनॉमिक्स में पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री होना चाहिए।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर

सॉफ्टवेर इंजीनियरिंग के छात्रों के करियर की नीव शुरू ही गणित के ज्ञान से होती है। सॉफ्टवेयर इंजीनियरों का काम सॉफ्टवेयर डिजाइन करना और उसे डेवलप करना होता है। इस काम में छात्रों को कम्प्यूटर साइंस के साथ-साथ मैथ्स की थ्योरी और उनके सिद्धांतों का प्रयोग करना पड़ता है। इस क्षेत्र में एक्सपर्ट छात्रों के लिए बहुत अच्छे विकल्प मौजूद है तथा अगले 10 वर्षों में इस क्षेत्र में काफी संभावनाएं आने वाली हैं जो छात्रों के हित में मददगार साबित होंगे।

स्टैटिस्टिक्स

गणित पर जिनको महारत हासिल है उनके लिए स्टैटिस्टिक्स में कैरियर बनाना बहुत अच्छा विकल्प है। सांख्यिकीविद को डाटा का विश्लेषण करना, परिणामों को पाइ चार्ट्स, बार ग्राफ, टेबल के रूप में प्रस्तुत करने का काम करना होता है। हेल्थ केयर, शिक्षा सहित कई क्षेत्रों में सांख्यिकीविद की काफी मांग होती है। सांख्यिकीविद बनने के लिए आपके पास मैथमेटिक्स स्टैटिस्टिक्स में स्नातक की डिग्री या फिर स्टैटिस्टिक्स में पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री होनी चाहिए।

चार्टर्ड एकाउंटेंट

चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने का पहला रूल ही गणित में दक्ष होना है। क्योंकि चार्टर्ड एकाउंटेंट यानि कि सीए का पूरा काम एकाउंटिंग, ऑडिटिंग और टैक्सेशन से जुड़ा होता है। अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि के चलते फाइनेंस और एकाउंट से जुड़े क्षेत्रों में करियर के काफी स्कोप जुड़ते जा रहे हैं जो गणित में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए एक अच्छा करियर विकल्प का मार्ग है।

ऑपरेशन रिसर्च एनालिस्ट

इससे जुड़े काम को एप्लाइड मैथ्स और फॉर्मल साइंस की एक शाखा के रूप में ही समझा जाता है। इसमें आधुनिक लॉजिकल विधियों जैसे की स्टैटिस्टिकल एनालिसिस और मैथमेटिकल ऑप्टिमाइजेशन का प्रयोग किया जाता है। ऑपरेशन रिसर्च एनालिस्ट इन्हीं आधुनिक विधियों कि मदद से मैनेजर को सही निर्णय लेने और समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव प्रदान करते है।

बैंकिंग

अगर आपकी गणित में अच्छी पकड़ है तो आप बैंकिंग क्षेत्र में आप एकाउंटेंट, कस्टमर सर्विस, फ्रंट डेस्क, कैश हैंडलिंग, एकाउंट ओपनिंग, करंट एकाउंट, सेविंग एकाउंट, लोन प्रोसेसिंग ऑफिसर, सेल्स एग्जीक्यूटिव, रिकवरी ऑफिसर के प्रोफाइल्स के लिए भी कोशिश कर अपना भविष्य बना सकते है क्यूंकि इन सभी में मैथमेटिकल स्किल्स का होना जरूरी है।

मैथमेटिशियन

अगर आप मैथ को दिल से प्यार करते हैं और इसमें सबसे ज्यादा माहिर हैं, तो मैथमेटिशियन बनना आपके लिए सबसे बेस्ट होगा। यह ऐसे प्रोफेशनल्स होते हैं जो मैथ्स के बुनियादी क्षेत्र का अध्ययन या रिसर्च संबंधी कार्य करते हैं। इसके अलावा ये लॉजिक, ट्रांसफार्मेशन, नंबर आदि समस्याओं का निर्धारण करते हैं। इस क्षेत्र में भी मैथ्स का ज्ञान होना बहुत जरूरी है तथा इस क्षेत्र में छात्र अच्छा मुकाम हासिल कर सकते हैं।

कम्प्यूटर सिस्टम एनालिस्ट

कम्प्यूटर सिस्टम एनालिस्ट आईटी टूल्स का उपयोग करते हुए किसी भी एंटरप्राइजेज को लक्ष्य पूरा करने में मदद पहुंचाते हैं। यदि आपको गणित का ज्ञान नहीं तो आप आगे नहीं बढ़ सकते और इसी के विपरीत यदि आपका गणित के प्रति रुझान है तो आप आसानी से अपने काम को पूरा कर सकते हैं। ज्यादातर सिस्टम एनालिस्ट अपना काम कम्प्यूटर और सॉफ्टवेयर के जरिए करते हैं तथा इसे ठीक तरह से समझने के लिए गणित पहली नींव है।

उत्साह और जुनून के साथ देशभक्ति

वायु सेना में करियर

भारतीय वायु सेना में करियर बनाने के लिए ऊर्जावान, उत्साही युवाओं की हमेशा मांग रहती है। क्या आप इस प्रोफाइल में फिट बैठते हैं। एयर फोर्स, यानी वायु सेना में करियर को प्रतिष्ठित माना जाता है और युवाओं में यह खासा लोकप्रिय भी है। इस फील्ड में यदि आप करियर बनाते हैं, तो आपका नाता देश सेवा, नवीनतम टेक्नोलॉजी और उत्कृष्ट शारीरिक मानसिक कौशल से होगा।

भारतीय वायु सेना को ऐसे युवाओं की जरूरत है, जो ऊर्जावान हों, पैशनेट हों, उत्साही हों और जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हों। मगर ध्यान रहे, एयर फोर्स का हिस्सा होने में खासे परिश्रम की जरूरत होती है। इसकी चयन प्रक्रिया बहुत कड़ी है। इसमें प्रेक्टिकल टेस्ट, रिटन टेस्ट, फिजिकल तथा मेडिकल टेस्ट, सायकोलॉजिकल टेस्ट, इंटरव्यू, ग्रुप टास्क आदि शामिल होते हैं।

कैसे हों शामिल

भारतीय वायु सेना में शामिल होने के लिए आपको राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) की प्रवेश परीक्षा में बैठना होगा। यदि आपकी उम्र साढ़े 16 साल से 19 साल है, आप भारतीय नागरिक हैं और आपने फिजिक्स तथा मैथ्स विषयों के साथ 12वीं पास की है, तो आप इस परीक्षा में बैठ सकते हैं। चयन के बाद उम्मीदवारों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में 3 साल की गहन ट्रेनिंग दी जाती है। इसकी समाप्ति पर एयर फोर्स अकादमी में स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग होती है। ग्रेजुएट भी एयर फोर्स का हिस्सा बन सकते हैं। आरंभिक चयन के बाद शॉर्ट-लिस्ट किए गए उम्मीदवारों को एयर फोर्स ट्रेनिंग संस्थान में भेजा जाता है।

कौन-कौन सी ब्रांच

एयर फोर्स में करियर के अवसरों को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है : फ्लाइंग ब्रांच, टेक्निकल ब्रांच तथा ग्राउंड ड्यूटी ब्रांच।

फ्लाइंग ब्रांच

इस ब्रांच में विभिन्न श्रेणियों के पायलटों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। इस ब्रांच में आकर आपको उड़ान भरने के भरपूर मौके मिलेंगे। इसमें हैलिकॉप्टर पायलट, फाइटर पायलट तथा ट्रांसपोर्ट पायलट के रूप में ग्रेजुएट्स तथा पोस्ट ग्रेजुएट्स के लिए अनेक अवसर हैं। पायलट ट्रेनिंग हैदराबाद से 43 किलोमीटर दूर डंडीगल स्थित एयर फोर्स एकेडमी में दी जाती है। इस ब्रांच में शामिल होने के बाद आपको आपके डेजिग्जनेशन, ट्रेनिंग व अनुभव के आधार पर विभिन्न मिशनों का हिस्सा बनाया जाएगा।

टेक्निकल ब्रांच

एयर फोर्स की टेक्निकल ब्रांच अत्याधुनिक विमानों तथा शस्त्रों के सही संचालन को सुनिश्चित करती है। यह विमानों के मेंटेनेंस तथा सर्विसिंग और एयर फोर्स स्टेशन पर कम्युनिकेशन तथा सिग्नल से संबंधित कार्यों को करने के लिए क्रमश : मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक्स विभागों से एयरोनॉटिकल इंजीनियर्स को नियुक्त करती है।

ग्राउंड ड्यूटी ब्रांच

यह ब्रांच मानव तथा अन्य संसाधनों का प्रबंधन कर वायु सेना का संचालन करती है। दरअसल यह एक ब्रांच न होकर इसमें अनेक ब्रांच समाहित हैं, जैसे : एडमिनिस्ट्रेशन ब्रांच, जिसके अधिकारी समस्त संसाधनों के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करते हैं। इसके कुछ अधिकारी एयर ट्रैफिक कंट्रोलर व फ्लाइट कंट्रोलर के रूप में भी काम करते हैं। इसी प्रकार अकाउंट्स ब्रांच में अकाउंट्स संबंधी तमाम काम किए जाते हैं। लॉजिस्टिक्स ब्रांच के अधिकारियों को कपड़ों से लेकर विमानों के पुर्जों तक तमाम तरह के सामान का प्रबंधन करना होता है। एजुकेशन ब्रांच के अधिकारी भविष्य के वायु सैनिकों को अच्छी से अच्छी शिक्षा तथा प्रशिक्षण सुनिश्चित करते हैं। मीटियॉरोलॉजी ब्रांच के अधिकारी उड़ान भर रहे पायलटों को गाइड कर उनकी उड़ान सुरक्षित करने में मदद करते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

जल्द ही वेनेजुएला लौटेंगी मारिया कोरिना मचाडो

काराकास, एजेंसी। वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो ने कहा है कि वह जल्द ही देश लौटेंगी। उन्हें 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला था। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य नए चुनाव की तैयारी करना है। मौजूदा कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने चेतावनी दी है कि लौटने पर उन्हें कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है। इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को अमेरिकी कार्रवाई में गिरफ्तार किया गया था। देश में राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है और आने वाले समय में हालात और बदल सकते हैं।

ब्राजील में बोल्सोनारो समर्थकों का प्रदर्शन

ब्रासीलिया, एजेंसी। ब्राजील में पूर्व राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो के समर्थकों ने कई शहरों में रैली निकाली। ये प्रदर्शन मौजूदा राष्ट्रपति लुइज इनासियो लुला दा सिल्वा के खिलाफ किया गया। साओ पाउलो और रियो डी जेनेरियो में हजारों लोग सड़कों पर उतरे। बोल्सोनारो फिलहाल जेल में हैं और उनके बेटे फ्लावियो बोल्सोनारो चुनाव में उतरने की तैयारी कर रहे हैं। समर्थकों का कहना है कि उनके नेता के साथ अन्याय हुआ है। हाल के सर्वे में लूला और फ्लावियो के बीच कड़ी टक्कर बताई जा रही है। आने वाला चुनाव ब्राजील की राजनीति के लिए अहम माना जा रहा है।

गाजा में फिर बढ़ी चिंता

गाजा , एजेंसी। गाजा में हाल ही में युद्धविराम से कुछ राहत मिली थी, लेकिन ईरान पर हमलों के बाद हालात फिर तनावपूर्ण हो गए हैं। इस्राइल ने सीमाएं बंद कर दी हैं, जिससे खाने-पीने की चीजों की कमी का डर बढ़ गया है। कई लोग राशन जमा करने लगे हैं और आटे जैसी जरूरी चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। युद्ध की शुरुआत हमास के हमले के बाद हुई थी। अब रमजान के महीने में लोग फिर से मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। हालांकि कुछ इलाकों में गोलीबारी कम हुई है, लेकिन अनिश्चितता बनी हुई है। लोगों को डर है कि नई जंग की वजह से गाजा की समस्या पर दुनिया का ध्यान कम हो सकता है।

टेक्सास शूटिंग की घटना- हमलावर की हुई पहचान

ऑस्टिन , एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास राज्य के ऑस्टिन शहर में एक बार के बाहर गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और 14 लोग घायल हो गए। पुलिस ने हमलावर की पहचान 53 वर्षीय नदियागा डियाग्ने के रूप में की है। वह हमले के समय ऐसे कपड़े पहने था जिन पर 'अल्लाह की संपत्ति' लिखा था और ईरान का झंडा बना था। पुलिस ने उसे मौके पर ही मार गिराया। फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन इस घटना की जांच संभावित आतंकी हमले के रूप में कर रही है। हमलावर ने पहले गाड़ी से गोली चलाई और फिर राइफल लेकर सड़क पर फायरिंग की। पुलिस की त्वरित कार्रवाई से और बड़ी जनहानि टल गई।

पाकिस्तान में सुरक्षा बैठक

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने देश की सुरक्षा स्थिति पर एक बड़ी बैठक की अध्यक्षता की। यह बैठक ईरान में हालात बिगड़ने और अफगानिस्तान के साथ बढ़ते तनाव के बाद बुलाई गई। पाकिस्तान ने हाल ही में 'ग़ज़ब लिल हक' नाम से अभियान चलाया है, जो अफगान तालिबान के खिलाफ बताया जा रहा है। इस बीच अमेरिका और इज़राइल के हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ गया है। बैठक में सेना प्रमुख और कई बड़े मंत्री मौजूद रहे। ईरान में फंसे पाकिस्तानी नागरिकों को सुरक्षित निकालने पर भी चर्चा हुई। उन्हें अज़रबैजान के रास्ते वापस लाया जा रहा है। क्षेत्रीय हालात को देखते हुए शरीफ ने अपना प्रस्तावित रूस दौरा भी टाल दिया है।

भारतीय राजनयिक सिद्धार्थ चटर्जी थिंक टैंक के सीईओ नियुक्त

वियना, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र के अनुभवी भारतीय मूल के राजनयिक सिद्धार्थ चटर्जी को वियना स्थित थिंक टैंक ग्लोबल नेबर्स का सीईओ नियुक्त किया गया है। 62 वर्षीय चटर्जी रविवार को चीन में संयुक्त राष्ट्र के रेजिडेंट कोऑर्डिनेटर पद से सेवानिवृत्त हुए। 2 मार्च से वे अपना नया कार्यभार संभालेंगे। चटर्जी नेशनल डिफेंस एकेडमी के पूर्व छात्र और भारतीय सेना के पूर्व अधिकारी हैं। उन्हें 1995 में वीरता के लिए सम्मानित किया गया था।

ईरान के बाद इजरायल ने लेबनान को जंग में घसीटा, राजधानी पर ताबड़तोड़ हमले

तेलअवीव, एजेंसी। इजरायल और अमेरिका के हमलों में ईरान के शीर्ष नेता अयातुल्लाह अली खामनेई मारे गए हैं। इसके अलावा ईरान के कई शहरों पर हमले जारी हैं तो वहीं ईरान ने भी जवाबी ऐक्शन लेते हुए इजरायल समेत आसपास के 6 सुन्नी मुस्लिम देशों पर भी अटैक किए हैं। इस बीच इजरायल ने भी जंग में एक और देश को घसीट लिया है। इजरायल पर हिजबुल्लाह की ओर से हमले किए गए थे और उसने जवाबी कार्रवाई करते हुए लेबनान पर बम बरसाए हैं। ये हमले लेबनान की राजधानी बेरूत पर किए गए हैं। हिजबुल्लाह ईरान समर्थिक उग्रवादी गुट है, जो लेबनान में सक्रिय रहा है। इसके अलावा हमास और हूती उग्रवादियों को भी ईरान के ही प्रॉक्सी गुट माना जाता है।

हिजबुल्लाह ने उत्तरी ईरान के हाइफा पर ड्रोन और रॉकेट हमले किए थे। इस पर इजरायल ने जवाबी ऐक्शन लिया और लेबनान की राजधानी में फाइटर जेट्स से हमला किया है। हिजबुल्लाह ने यह कहते हुए हमला किया था कि हम अयातुल्लाह खामेनेई की हत्या का बदला ले रहे हैं। इसी पर अब इजरायल ने जवाबी ऐक्शन लिया है। हिजबुल्लाह ने एक बयान जारी कर कहा कि इजरायल ने हमारे नेता को हमारा है। अब हम भी चुप नहीं बैठ सकते। हम जवाबी ऐक्शन लेंगे। हमारे पास अधिकार है कि रक्षा करें और दुश्मन पर सही समय और सही जगह पर अटैक करें।

ईरान समर्थित समूह ने कहा कि बीते 15 महीनों से लगातार इजरायल हमारे ऊपर हमले कर रहा है। ऐसी स्थिति लगातार जारी नहीं रह सकती। उसे लेबनान से हटना होगा। इजरायल का लेबनान पर हमला एक और नए विवाद का मोर्चा खोलने जैसा है। लेबनान की सरकार लगातार हिजबुल्लाह से पल्ला झाड़ती रही है। ऐसी स्थिति में सीधे राजधानी में हमला करने से स्थिति बिगड़ सकती है। वहीं इजरायल का कहना है कि वह इस जंग को निर्णायक मोड़ पर ही खत्म करना चाहता है। हालांकि 2024 की जंग के बाद से हिजबुल्लाह कमजोर पड़ा है। लेबनान की सरकार का उसे समर्थन नहीं है और इजरायली हमलों में उसके ज्यादातर लोग मारे जा चुके हैं। खासतौर पर टॉप लीडरशिप को इजरायल ने चुन-चुनकर खत्म किया है।

क्या है ईरान का ट्रिपल एच, जिस पर हमलावर है इजरायल : बता दें कि हिजबुल्लाह, हमास और हूती को ट्रिपल एच कहा जाता रहा है। ये तीनों समूह ईरान के समर्थन वाले माने जाते हैं। ये सभी इजरायल के खिलाफ रहे हैं। अब गाजा में हमले कर इजरायल ने एक तरफ हमास को खत्म करने की कोशिशें की हैं तो वहीं लेबनान में मिसाइलें दागकर हिजबुल्लाह को निशाना बनाया है।

स्थानीय मीडिया के अनुसार इजरायली हमले लेबनान के दक्षिणी इलाके में गांवों में हुए हैं। इसके अलावा पूर्वी क्षेत्र में बेका वैली को भी टारगेट किया गया है।

पाकिस्तान में अमेरिकी दूतावास पर वीजा सेवाएं स्थगित, हिंसक प्रदर्शन के चलते सुरक्षा अलर्ट जारी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में अमेरिकी दूतावास और वाणिज्य दूतावासों के बाहर हिंसक प्रदर्शन और झड़पों की खबरों के बीच अमेरिकी सरकार ने सुरक्षा चेतावनी जारी की है। अमेरिकी दूतावास ने कहा कि लाहौर और कराची में जारी प्रदर्शन और हिंसा, साथ ही इस्लामाबाद और पेशावर में अतिरिक्त विरोध प्रदर्शन की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, अमेरिकी कर्मचारियों को सीमित गतिविधि और घर पर रहने का निर्देश दिया गया है। सुरक्षा चेतावनी में अमेरिकी नागरिकों को स्थानीय समाचार पर नजर रखने, भीड़ से दूर रहने, अपने आसपास सतर्क रहने और अपने एसटीईपी रजिस्ट्रेशन को अपडेट रखने की सलाह दी गई है।

वीजा और अमेरिकी सेवाएं रद्द अमेरिकी दूतावास ने बताया कि कराची और लाहौर के वाणिज्य दूतावास, तथा इस्लामाबाद अमेरिकी दूतावास में 2 मार्च के सभी वीजा अपॉइंटमेंट और अमेरिकी नागरिक सेवाएं रद्द कर दी गई हैं। 'रद्द कर देने चाहिए पाकिस्तानियों के सभी वीजा' गौरतलब है कि कराची में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास के बाहर हिंसक प्रदर्शन हुए। इसके बाद एक अमेरिकी रूढ़िवादी (कंजरवेटिव) कार्यकर्ता ने अमेरिका के विदेश विभाग से मांग की है कि पाकिस्तानियों के सभी वीजा, यहां तक कि ग्रीन कार्ड भी रद्द कर दिए जाएं। लॉरा लूमर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में विदेश मंत्री मार्को रुबियो को टैग करते हुए लिखा 'अमेरिकी विदेश विभाग को पाकिस्तानियों के सभी वीजा और ग्रीन कार्ड भी जब तक संभव हो, निलंबित कर देने चाहिए।' उनकी यह मांग कराची में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास परिसर के बाहर हिंसक प्रदर्शन और झड़पों की खबरों के बाद आई है। लूमर ने दावा किया कि पाकिस्तान में ईरान के सुप्रीम लीडर की मौत से नाराज छह प्रदर्शनकारियों की मौत हो गई और 20 अन्य घायल हो गए, ये लोग अमेरिकी वाणिज्य दूतावास के कड़ी सुरक्षा वाले परिसर में घुसने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि आज दोपहर दोबारा घुसने की कोशिश करने के दौरान कई अन्य लोगों को गोली लगी और उनकी मौत हो गई। हालांकि अमेरिकी विदेश विभाग ने उनकी इस मांग पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

जापान : वोल्केनो आइलैंड्स पर आया 6.1 तीव्रता का भूकंप

हॉन्ग कॉन्ग , एजेंसी। जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेस ने बताया कि सोमवार को सुबह 03:55 जीएमटी पर जापान के वोल्केनो आइलैंड्स क्षेत्र में 6.0 तीव्रता का भूकंप आया। समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने बताया कि इस भूकंप का केंद्र 10.0 किमी की गहराई पर था। इससे पहले 21 जनवरी 2026 को यूएसजीएस ने वोल्केनो आइलैंड्स, जापान क्षेत्र में 6.1 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया था, जिसकी गहराई 25.5 किमी (15.8 मील) थी। ईएमएससी ने भी इसी तीव्रता और गहराई की पुष्टि की।

भूकंप का केंद्र साइपन से 937 किमी उत्तर-पश्चिमोत्तर, टिनियन से 957 किमी उत्तर-पश्चिमोत्तर और गुआम (यिगो और डेडेडो) से लगभग 1,090 किमी उत्तर-पश्चिम-उत्तर में स्थित था। इस भूकंप से सुनामी का कोई खतरा नहीं था। वोल्केनो आइलैंड्स इजु-बोनिन-मैरियाना आर्क का हिस्सा हैं, जो एक सबडक्शन जोन है। यहां प्रशांत महासागरीय प्लेट फिलिपीनी सी प्लेट के नीचे दबती है। इस क्षेत्र में अक्सर मध्यम गहराई वाले भूकंप आते हैं, जो मुख्य रूप से इस दबती प्लेट में फॉल्टिंग की वजह से होते हैं।

इस क्षेत्र में 6.0-6.5 तीव्रता के भूकंप आम हैं और आमतौर पर सतही नुकसान या सुनामी का कारण नहीं बनते। जापान भी दुनिया के सबसे सक्रिय टेक्टोनिक क्षेत्रों में आता है, जहां गहरे महासागरीय खांचे और ज्वालामुखीय आर्क की जटिल चार-आर्क प्रणाली मौजूद है। देश के लगभग 80 प्रतिशत भूकंप यहीं से आते हैं, जो शक्तिशाली सबडक्शन फोर्स की वजह से होते हैं।

'हिजबुल्ला के इस्राइल पर हमले गैर-जिम्मेदाराना: लेबनान प्रधानमंत्री नवाफ सलाम

लेबनान , एजेंसी। लेबनान के प्रधानमंत्री नवाफ सलाम ने दक्षिणी लेबनान से इस्राइल की ओर दागे गए रॉकेट हमलों पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि ऐसे कदम देश की सुरक्षा को खतरे में डालते हैं और इस्राइल को हमले जारी रखने का बहाना देते हैं। उन्होंने बिना किसी संगठन का नाम लिए कहा कि दक्षिणी लेबनान से रॉकेट लॉन्च करना गैर-जिम्मेदाराना और संदिग्ध कार्रवाई है, जो नागरिकों की सुरक्षा को जोखिम में डालती है और देश को नए संघर्ष की ओर धकेल सकती है।

देश को किसी नई सैन्य टकराव में घसीटने नहीं देंगे : प्रधानमंत्री सलाम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि सरकार देश को किसी नई सैन्य टकराव में नहीं घसीटने देगी और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

हिजबुल्ला ने क्या किया : यह बयान ऐसे समय आया है जब उग्रवादी संगठन हिजबुल्ला ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के जवाब में लेबनान से इस्राइल की ओर कई रॉकेट दागे। नवंबर 2024 में लागू हुए युद्धविराम समझौते के बाद यह पहली बार है जब हिजबुल्ला ने इस्राइल पर इस तरह का हमला किया है।

इस्राइल की कार्रवाई : रॉकेट हमलों के बाद इस्राइल ने लेबनान के हिजबुल्ला नियंत्रित इलाकों पर हवाई हमले किए। इस्राइली डिफेंस फोर्स ने कहा कि उसने लेबनान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है और हमलों के लिए हिजबुल्ला को जिम्मेदार ठहराया है। इस्राइली सेना के मुताबिक, एक रॉकेट को एयर डिफेंस सिस्टम ने इंटरसेप्ट कर लिया, जबकि बाकी खुले इलाकों में गिरे। उत्तरी इस्राइल में हमलों के दौरान एयर रेड सायरन बजाए गए। इस्राइल की आपातकालीन सेवा मागेन डेविड अदोम ने बताया कि हमलों में तत्काल किसी की मौत की सूचना नहीं है, हालांकि शेल्टर की ओर भागते समय कुछ लोगों को हल्की चोटें आईं। लेबनान और इस्राइल के बीच तनाव नवंबर 2024 के युद्धविराम के बाद से लेबनान की ओर से रॉकेट हमले बहुत कम हुए थे, लेकिन इस्राइल ने दक्षिणी और पूर्वी लेबनान में खतरों को रोकने के नाम पर समय-समय पर हवाई हमले जारी रखे हैं। इससे एक दिन पहले हिजबुल्ला प्रमुख नईम कासिम ने औपचारिक श्रद्धांजलि भाषण में अयातुल्ला खामेनेई की हत्या को अपराध की पराकाष्ठा बताया था। इसके बाद क्षेत्र में तनाव और बढ़ गया है।

मध्य पूर्व में फंसे हैं एक लाख से अधिक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक, विदेश मंत्री पेनी वोंग ने दी जानकारी

कैनबरा , एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री ने सोमवार को बताया कि ईरान के खिलाफ अमेरिकी-इजरायली हमलों के कारण उड़ानें रद्द होने के बाद लगभग एक लाख से अधिक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक वर्तमान में मध्य पूर्व में फंसे हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वोंग ने ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन टीवी से कहा कि सरकार मध्य पूर्व में फंसे नागरिकों के लिए विशेष वापसी उड़ानें शुरू करने वाली है, लेकिन इससे पहले प्रभावित क्षेत्रों में सामान्य (कमर्शियल) उड़ानों के दोबारा शुरू होने का इंतजार हो रहा है। उन्होंने कहा, 'इस क्षेत्र में बहुत लोग हैं, इसलिए अगर हम लोगों को फिलहाल कमर्शियल उड़ानों से यात्रा करने में मदद कर सकें, तो वे सबसे जल्दी घर पहुंच पाएंगे। सोमवार को जारी एक बयान में वोंग ने कहा कि सरकार अब ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों को बहरीन, ईरान, इराक, इजरायल, कुवैत, लेबनान, फिलिस्तीन, कतर, सीरिया, संयुक्त अरब अमीरात और यमन की यात्रा न करने की सलाह दे रही है। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि लोगों को जॉर्डन, ओमान और सऊदी अरब की यात्रा करने से पहले दोबारा सोचने की जरूरत है।

जो ऑस्ट्रेलियाई नागरिक पहले से ही मध्य पूर्व में हैं, उन्हें सरकार ने सलाह दी है कि वे वहां की स्थिति और स्थानीय खबरों पर नजर रखें। इसके साथ ही नागरिकों को अपनी यात्रा की जानकारी सीधे एयरलाइंस या ट्रैवल एजेंट से कंफर्म करने, अपने ट्रैवल इंश्योरेंस की जांच करने के साथ ही और ताजा जानकारी से अपडेट रहने के लिए कहा गया है। वोंग ने बताया कि विदेश मामलों और व्यापार विभाग ने मध्य पूर्व में मौजूद ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों की मदद के लिए एक सेंटर स्थापित किया है। उप प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने कहा कि सरकार ने वहां तैनात लगभग 100 रक्षा कर्मियों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाए हैं।

ऑपरेशन सिंदूर में तबाह हुए नूर खान बेस पर अफगानिस्तान का हमला, मारे गए 35 पाकिस्तानी सैनिक

इस्लामाबाद, एजेंसी। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। पिछले चार दिनों से दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने हैं। अफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को बड़ी घोषणा की है। उन्होंने बताया, अफगान वायुसेना ने पाकिस्तान के कई सैन्य ठिकानों पर सटीक हवाई हमले किए हैं। इस कार्रवाई से दोनों पड़ोसी देशों के बीच हालात और ज्यादा बिगड़ गए हैं। सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक बयान में अफगान रक्षा मंत्रालय ने बताया कि हमले रावलपिंडी के नूर खान एयरबेस पर हुए। इसके अलावा बलूचिस्तान के क्वेटा में 12वीं डिवीजन के मुख्यालय और खैबर पख्तूनख्वा की मोहमंद एजेंसी में ख्वाजाई कैंप पर भी बमबारी की गई। तालिबान का दावा है कि उन्होंने पाकिस्तान के कई अन्य जरूरी सैन्य कमांड सेंटरों को भी भारी नुकसान पहुंचाया है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह ऑपरेशन पाकिस्तानी सेना की हालिया घुसपैठ का बदला है। पाकिस्तान ने पिछले दिनों काबुल और बगराम एयरबेस पर हमले किए थे। मंत्रालय ने चेतावनी दी है कि अगर पाकिस्तान ने फिर से अफगान हवाई सीमा का उल्लंघन किया या कोई आक्रामक हरकत की, तो उसे और भी कड़ा और निर्णायक जवाब मिलेगा। यह तनाव तब और बढ़ गया जब पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के खिलाफ खुली जंग का एलान कर दिया। पाकिस्तान ने शुक्रवार को काबुल और कंधार में एयरस्ट्राइक की थीं। इसके कुछ घंटों बाद ही अफगान सेना ने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। रावलपिंडी का नूर खान एयरबेस पाकिस्तान की वायुसेना के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे मई 2025 में भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के समय भी निशाना बनाया गया था। उस हमले में बेस के ढांचे को काफी नुकसान पहुंचा था।

टोलो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, तालिबान ने रात भर चले हमलों में 32 पाकिस्तानी सैनिकों के मारे जाने का दावा किया है। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि उनकी 203 मंसूरी, 201 सिलाब और 205 अल-बद्र कॉर्प्स ने इन ऑपरेशनों को पूरा किया। इस दौरान 10 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए, 10 घायल हुए और चार सैन्य चौकियां पूरी तरह तबाह हो गईं। अफगान सेना ने पाकिस्तान के दो सैन्य ड्रोन भी मार गिराए हैं।

ईरान पर मिसाइलें बरसाने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका को दिया अपना मिलिट्री बेस

लंदन, एजेंसी। मिडिल ईस्ट में युद्ध के महायुद्ध में तब्दील होने का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। ईरान पर अमेरिका और इजरायली हमले थमते नजर नहीं आ रहे हैं। वहीं ईरान ने भी पूरी ताकत से पलटवार करते हुए खाड़ी देशों में अमेरिकी बेस को निशाना बनाया है। यूईए, कुवैत जैसे देशों में धमाकों की आवाजें गूंज रही हैं। इस बीच अब ब्रिटेन ने ईरान पर मिसाइलें बरसाने के लिए अपना मिलिट्री बेस अमेरिका को देने का ऐलान कर दिया है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने रविवार को कहा है कि उनके देश ने ईरानी मिसाइलों के खिलाफ हमलों के लिए ब्रिटिश बेस का इस्तेमाल करने के लिए अमेरिका के अनुरोध को मान लिया है।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो मैसेज शेयर करते हुए कहा, 'अमेरिका ने कुछ खास और लिमिटेड डिफेंसिव मकसद के लिए ब्रिटिश बेस का इस्तेमाल करने की अनुमति मांगी है। हमने ईरान को पूरे इलाके में मिसाइल दागने से रोकने के लिए इस अनुरोध को मानने का फैसला किया है।'

क्या बोले स्टारमर : हालांकि स्टारमर ने इस दौरान दोहराया है कि ब्रिटेन शनिवार को ईरान पर हुए अमेरिकी इजरायली एयर स्ट्राइक में शामिल नहीं था। उन्होंने ईरान पर आरोप लगाते हुए कहा कि ईरान ने पूरे इलाके में लगातार हमले किए हैं और उसकी मिसाइलों ने उन एयरपोर्ट और होटलों को निशाना बनाया है जहां ब्रिटिश नागरिक ठहरे हुए थे।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने कहा, 'हमले फैसला किया था कि ब्रिटेन ईरान पर हमलों

में शामिल नहीं होगा यह फैसला हमने सोच-समझकर लिया था क्योंकि हमारा मानना ??है कि इस इलाके और दुनिया के लिए आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका बातचीत से समझौता करना है। लेकिन फिर भी ईरान ब्रिटिश हितों पर हमला कर रहा है और ब्रिटिश लोगों को बहुत बड़े खतरे में डाल रहा है।'

ईरान ने खाई कसम : ब्रिटिश प्रधानमंत्री का यह बयान ऐसे समय में आया है जब ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात, कतर और कुवैत सहित अन्य खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य अड्डों को निशाना बनाकर मिसाइल और ड्रोन हमले किए हैं। ईरानी कार्रवाई को अमेरिका और इजरायल द्वारा पहले किए गए संयुक्त हमलों का प्रतिशोध बताया गया है। ईरान ने सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई की हत्या का बदला लेने की कसम भी खाई है।

साइप्रस में ब्रिटिश बेस पर ड्रोन से हमला : इस बीच स्काई न्यूज ने ब्रिटिश के रक्षा मंत्रालय के हवाले से बताया कि साइप्रस में ब्रिटेन के रॉयल एयर फोर्स बेस अक्रोटिरी पर एक संदिग्ध ड्रोन हमला हुआ है। साइप्रस ने भी ड्रोन हमले की पुष्टि की है जिसमें द्वीप पर एक ब्रिटिश बेस को निशाना बनाया गया है और काफी नुकसान भी हुआ है। हालांकि किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

बेल्जियम ने जब्त किया रूस का संदिग्ध शैडो फ्लीट तेल टैंकर : ब्रसेल्स, एजेंसी। बेल्जियम के रक्षा मंत्री थियो फ्रेंकेन ने रविवार को घोषणा की कि उनकी सेना ने रूसी शैडो फ्लीट के एक तेल टैंकर को जब्त कर लिया है। एथेरा नामक यह जहाज यूरोपीय संघ की प्रतिबंध सूची में शामिल है और इसे जीब्रूग बंदरगाह ले जाया गया है। रक्षा मंत्री ने बताया कि जहाज पर फर्जी झंडे और दस्तावेजों के साथ चलने का संदेह है। यूक्रेन युद्ध के कारण लगे प्रतिबंधों से बचने के लिए रूस ऐसे टैंकरों का उपयोग करता है। फ्रेंकेन ने कहा कि रूस के युद्ध को रोकने के लिए इन जहाजों को हटाना जरूरी है। वहीं, रूस ने अपने जहाजों की जब्ती को समुद्री डकैती करार दिया है।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)